बुद्बुद

हरिभाऊ उपाध्याय

प्रकाशक
सस्ता-साहित्य-मण्डल
अजमेर ।

बुद्बुद के पक्ष में

जिसकी कलम से ये बुद्बुद निकले हैं, वह खुद ही उनके पक्ष में क्या लिखे ? वह इतना ही कह सकता है कि ये कोरी मन की तरंगें नहीं हैं। अवलोकन, मन्थन और अनुभव के फल हैं। फिर भी पाठक इस में कल्पना की ऊँची उड़ान, भावना का आवेग, प्रतिभा का चमत्कार या ज्ञान की ज्योति की आशा न रक्खें। यों तो ये बहुत सीधे-सादे और मामूली विचार हैं परन्तु प्रत्येक में कुछ-न-कुछ शिक्षा अवश्य है। इन के लिखने के कारण मुझे खुद बहुत लाभ हुआ है। अपने आदर्श से अपने जीवन का मेल मिलाते रहने में, जीवन का और चित्त का निरीक्षण करने में, जीवन के कठिन और अशान्तिकारी प्रसंगों पर, इनसे मुझे काफी सहायता, प्रकाश, प्रेरणा और सान्त्वना मिली है। इससे मेरा अनुमान होता है कि अपने जीवन को उच्च बनाने की अभिलाषा रखने वाले पाठकों को भी शायद इनसे कुछ सहायता मिले। इसी आशा के बल पर मैं इन्हें प्रकाशित करने के लिए दे रहा हूँ।

हरिभाऊ उपाध्याय

ज्ञान-खानि का रत्न नहीं हूँ, और न काव्यकला गुम्बद।
मैं तो कोरा खार सिन्धु के जल का हलका-सा बुद्बुद॥

× × ×

अश्रु नहीं जो व्यथा-कथा को जग के उर में लिख-जाऊँ।
मुक्ता-फल हूँ नहीं स्वर्ग-सुन्दरियों में आदर पाऊँ॥
मैं तो खारे जल का बुद्बुद रीता आता जाता हूँ।
खाली जग में आकर क्षणभर सूने में लय पाता हूँ॥

बुद्‌बुद

जिसने आत्म-विसर्जन कर दिया है, किसी उच्च उद्देश्य के लिए अपने आप को समर्पित कर दिया है, उसे बीमारी, गृह-कष्ट, उपेक्षा, कैसे अधीर बना सकते हैं ? यदि इन बीच की मंजिलों में ही उसका धीरज छूट गया तो उसके आत्म-विसर्जन में जरूर खामी है।

× × ×

कर्तव्य-पालन पारस्परिक संबंधों और रिश्तों से बड़ी और ऊंची चीज है। जब तक खुद गर्जी है तब तक न तो कर्तव्य बड़ी कुरबानी के लिए प्रेरित कर सकता है, न मनुष्य रिश्तेदारी से ऊपर उठ सकता है।

× × ×

रिश्तेदारी भी एक कर्तव्य है। पर देश, समाज और मानवता-सम्बन्धी कर्तव्यों के मुकाबले में वह छोटी चीज है। बहुतों को बचाने के लिए थोड़ों को स्वाहा होना ही चाहिए।

× × +

पर बहुत दबाकर थोड़ों की आहुति नहीं ले सकते। दबाव का तो स्वाभाविक परिणाम है प्रतीकार।

यह नुक्ताचीनी, बहस, और कोसने का युग है। आत्मार्थी सुनता है और लाभ उठाता है। पर किसी टीकाकार, दलीलबाज़ और दोष दर्शी से किसी ने यह भी पूछा है कि खुद तुम्हें इससे कितना लाभ पहुँचता है ?

× × ×

किन्तु कार्यशील को इतना अवकाश ही कहाँ कि वह इस 'परोपकार' में अपना समय लगावे ?

× × ×

मेरी समझ में यह बात नहीं आती कि युवावस्था और चिंता, युवक और निराशा, ये एक साथ कैसे रह लेते हैं ?

× × ×

जो कठिनाइयों से दब गया वह २५ वर्ष का पट्ठा होने पर भी बूढ़ा है।

× × ×

जिसका हृदय सदा आशा और उत्साह से भरा रहता है—कठिनाइयों और उलझनों में जिसका जोश और बढ़ने लगता है वह ७५ वर्ष का बूढ़ा भी जवानों से बढ़कर है।

× × ×

सफलता बाहरी साधनों और उपकरणों पर नहीं, बल्कि भीतरी तेज और ज्योति पर अवलम्बित है।

× × ×

अतएव आसपास देखने के बजाय तू भीतर देख, वहाँ उजाला रख।

जब तक तू दूसरे को कोसता रहेगा तब तक तेरी आत्मा को कुतर-कुतर कर थोथा बना देने वाला कीड़ा कदापि नहीं मरेगा।

× × ×

आध्यात्मिकता क्या है? मकान का जो रिश्ता बुनियाद से है, पेड़ का जो नाता जड़ से है, वही सम्बन्ध मनुष्य जीवन का आध्यात्मिकता से है। जबतक हम किसी बात का ऊपर ही ऊपर विचार करते हैं, तबतक हम व्यवहारी या दुनियादार हैं; जब हम उसकी तह तक पहुँचते हैं, तब हम आध्यात्मिक होते हैं।

× × ×

मुझे उनकी बुद्धि पर तरस आता है, जो जड़ और तह की बातों की उपेक्षा करते हैं और फिर भी परेशान हैं कि जल्दी सफलता क्यों नहीं मिलती?

× × ×

मन में संशय होने पर रस्सी सांप दिखाई देती है और मुझमित्र शत्रु मालूम होने लगते हैं। मैं अपने मन में संशय को स्थान देकर दूसरों के साथ कितना अन्याय और अपनी कितनी हानि करता हूँ! एक तो सांप को पालता हूँ और दूसरे कई मित्रों को खोता हूँ।

× × ×

संशय न रखने से कभी-कभी मनुष्य धोखा खा जाता है; पर संशय को पालने-पोसने से तो वह नित्य आत्मघात करता है।

सतर्कता और जागरूकता आत्मा की ज्योति है, पर संशय और अविश्वास हृदय की गंदगी है।

× × ×

मैं भाव-शुद्धि का जितना श्रेय खुद लेता हूँ उतना ही दूसरों को भी देता रहूँ तो ग़लतफ़हमी संसार में क्यों कर रहेगी? यह उदारता की नहीं, समान-व्यवहार की शिक्षा है।

× × ×

आज लोग धड़ल्ले से मिल के कपड़े को मेरे सामने खादी बता देते हैं। क्या वे मुझे मूर्ख समझने की अपनी मूर्खता का प्रदर्शन नहीं करते हैं? यदि यह अज्ञान हो तो उसे खादी सिद्ध करने की हुज्जत क्यों?

× × ×

मनुष्य टीका का विचार करे या अपने अन्तःकरण के भाव का! भाव शुद्ध है तो टीका से एक दृष्टि बिन्दु का परिचय ही मिल सकता है।

× × ×

मनुष्य टीका से तभी घबरा सकता है, जब उसका भाव दूषित हो, उसका ज्ञान मलिन हो।

× × ×

मुझे अपना जीवन सूना मालूम होता है, मेरा दुनिया में कोई नहीं है—यह बात एक आस्तिक, फिर ईश्वर-भक्त, अपने को ईश्वरार्पण कर देनेवाला, कैसे कह सकता है? यह सूनापन या तो शून्यता का भान एक उद्वेग मात्र है, या ईश्वरार्पण में कच्चाई है।

जब व्याकुलता विवेक पर हावी हो जाती है, तो वह बरसात की अन्धाधुन्ध बाढ़ की तरह जन समाज के लिए भयंकर हो जाती है।

× × ×

यदि भावना शुद्ध है, तो छोटे-बड़े मत-भेदों या प्रकृति-वैचित्र्य को अधिक महत्त्व देना, उनकी कड़ी आलोचना करना, परस्पर असुन्दरता का प्रदर्शन करना, अपनी आत्म-शुद्धि में संशय उत्पन्न करना है।

× × ×

मनुष्य जीवन-भर विद्यार्थी है, साधक है। यदि वह अपने कष्टों दुखों, असफलताओं, विपत्तियों और निन्दाओं की छान-बीन करे तो उसे छोटी-छोटी बात में से भी बड़ी बड़ी शिक्षायें मिल सकती हैं। यदि वह इस बात को सदैव याद रक्खे कि मेरे हर सुख-दुःख का कारण मेरे अपने ही कर्म हैं, तो उसे यह भी पता चल जायगा कि उसका कष्ट या निराशा उसके किस कार्य का फल है।

× × ×

कष्ट और विपत्ति हमें शिक्षा देनेवाले गुरु हैं। इनका उपदेश हमें आदर और श्रद्धा के साथ सुनना चाहिए यदि तू शिक्षायें लेने के लिए तैयार है तो गुत्थियों, कष्टों, अपमानों से मत डर।

× × ×

एक श्रद्धेय व्यक्ति ने मुझे अपनी छोटी-सी भूल के लिए दूसरे प्रति

शिक्षित आदमियों के सामने औंद दिया। मेरे अभिमान ने इसे अपना अपमान समझा। वह भीतर ही भीतर खड़ा उठा। सौभाग्य से तुरन्त अन्दर का जिज्ञासु, साधक जाग पड़ा। उसकी भवें उठीं, आँखें चमकीं—उनमें उलहना था—चेहरे पर मुस्काहट छा गई। अभिमान शर्मिन्दा हुआ। उसने मन ही मन उस डाँटनेवाले पुरुष को प्रणाम किया।

X X X

मैं डाक्टर हूँ, या मनुष्य, वकील हूँ या मनुष्य; सत्ताधारी हूँ या मनुष्य? माँ के पेट से मैं क्या पैदा हुआ हूँ? जन्म से लेकर मौत तक मेरा एक ही नाम क्या रहेगा?

X X X

यदि इन सबका एक ही उत्तर है—'मनुष्य' तो फिर मुझे जीवन में मनुष्यता को प्रधानता देनी चाहिए, मनुष्यता का विकास करना चाहिए, 'मनुष्य' नाम को सार्थक करना चाहिए, या दूसरी बातों के लोभ में मनुष्यता को कुरबान कर देना चाहिए?

X X X

और यदि मैं अपने छोटे-बड़े सुख साधनों या महत्वाकांक्षाओं के लिए अपनी मनुष्यता को कुरबान करता रहता हूँ तो मुझे अपना नाम 'मनुष्य' न रहने देकर और कुछ क्यों न रख लेना चाहिए?

संसार सफलता का पूजक है। वह लक्ष्य की उच्चता, प्रयत्न की तल्लीनता, साधन की शुद्धता से ही सन्तुष्ट नहीं होता, उसकी क़दर नहीं करता, वह तो पूछता ही रहता है, आखिर नतीजा क्या निकला

× × ×

इसलिए ऐ अनजान युवक, सफल होने तक धीरज मत छोड़। यदि तू जगत् का सहयोग चाहता है, तो जगत् की कड़ी कसौटी से मत घबरा।

× × ×

एक कहता है—'मैं जगत् के पास नहीं जाऊँगा। जगत् को ज़रूरत हो तो मेरे पास आवे।' यह अभिमान है। दूसरा कहता है—'मेरे पास एक अच्छी चीज है। जगत् को मैं निमन्त्रण देता हूँ। यदि वह वास्तव में अच्छी होगी तो जगत् क्यों न क़दर करेगा'' यह वास्तव में कोई साधक है।

× × ×

एक आदमी है, जिसे काम को सफल बनाने की बड़ी धुन है। वह इतना भी नहीं ठहरना चाहता कि जरा देख तो ले कि साधन-सामग्री सब ठीक ठीक भी है या नहीं। एक दूसरा आदमी है, जो साधन-सामग्री के यथोचित होने की अधिक चिन्ता रखता है। अब जल्दी सफल कौन होगा?

× × ×

किसी काम में प्राण पण से जुट जाना एक बात है, और किसी

तरह उसे जल्दी पूरा करना दूसरी बात है। पहली में आनन्द और सुख है, दूसरी में बेगार टलना है।

× × ×

यदि तू भूल कर चुका है तो फिर उसके बुरे परिणाम को साहस और प्रसन्नता के साथ भुगत—बेहया बनकर नहीं, बल्कि एक नम्र साधक की तरह।

× × ×

बुराई बुरा करने में है, न कि उसको स्वीकार करने में। स्वीकृति तो उलटा आत्मा को शुद्ध और बलवान् बनाती है।

× × ×

जब गलती की सजा मिलती हो, तो आनन्द मना। फोड़े पर नश्तर लगता हो, उसमें से मवाद निकल जाता हो, तो दुःख किस बात का

× × ×

'भावुक' जीवन और 'व्यावहारिक' जीवन अलहदा चीजें हैं। 'भावुक' के सुख-दुःख प्रायः कल्पित और 'व्यावहारिक' के प्रायः प्रत्यक्ष होते हैं। भावुकता और व्यावहारिकता का सामञ्जस्य ही सफल जीवन है।

× × ×

बालक और ज्ञानी के जीवन में अन्तर क्या है? एक में जो गुण विशेष सहज मालूम होते हैं, दूसरे में वे ज्ञानपूर्वक सिद्ध किये हुए होते हैं।

बालक को हम प्यार कर सकते हैं, पर अनुकरण नहीं। ज्ञानी को प्यार और अनुकरण दोनों कर सकते हैं। बालक मनुष्यता का आरम्भ है, अन्त नहीं।

× × ×

भावुकता एक वेग है, तूफ़ान है, बाढ़ है; विवेक सतत समान प्रवाह है।

× × ×

देशभक्तों में दो समुदाय देख पड़ते हैं, एक वह जो देश के करोड़ों दुःखी भाई-बहनों की सेवा करना चाहता है, दूसरा वह जो 'सेवा करने के लिए' अधिकार लेना चाहता है। काँग्रेस के चुनावों में जो झगड़े होते हैं उसका मुख्य कारण यही है कि हमें 'सेवा' की अपेक्षा अधिकार की ज्यादा फ़िक्र है।

× × ×

सेवा-परायण लोगों के यहाँ न्याय दुखी रहता है, क्योंकि उन्हें अपने साथ न्याय होने देने की उतनी चिन्ता नहीं रहती, जितनी अपने कर्त्तव्य-पालन की और अपने काम में लगे रहने की। इसके विपरीत न्याय अधिकार-प्रिय मनुष्य के इर्द-गिर्द घूमा करता है, क्योंकि अपनी अधिकार-रक्षा के लिए उसे उसके—न्याय के—सहारे की आवश्यकता होती है।

× × ×

प्रणाली मनुष्य से बड़ी नहीं होती। यदि प्रणाली को सुधारना है तो मनुष्य को पहले सुधारो।

मैं ५-७ साल से 'ब्राह्मण' की जगह 'बनिया' बनने का प्रयत्न कर रहा हूँ। ब्राह्मणता के ऐसी निगाह रहे हैं कि तुम बड़े 'व्योहारी' बन रहे हो। इधर एक 'बनिया' मित्र ने सर्टिफिकेट दिया—तुम तो २० आना ब्राह्मण हो। क्या मुझ गरीब की यह मिहनत बेकार ही जायगी?

× × ×

जेल में हम कुछ लोगों ने अपना 'धर्म' बदल लिया है। बल्कि यों कहें कि हमने एक नये धर्म की स्थापना की है। उसका नाम है—'जूताखोर' धर्म। हम जिधर निकल जाते हैं उधर ही से कोई एक जूता जमा देता है। हम मन ही मन उसका स्वाद ले लेते हैं। कभी तो बिला वजह इतनी ज़ोर से पड़ जाता है कि चाँद लाल हो जाती है—पर क्या करें, अपने धर्म से बँधे हुए हैं! देखें कितने राजस्थानी इस धर्म में अपना नाम लिखाने का हौसला रखते हैं।

× × ×

कुछ प्रिय मित्रों का यह प्रेम-मय उलहना मुझ तक पहुँचा है कि हरिभाऊजी ने तो गाँधीजी के पीछे अपना साहित्यिक व्यक्तित्व खो दिया है। यदि यह सच है, तो इसे मैं टीका नहीं, प्रशंसा समझता हूँ। पर सच तो यह है कि—

न मैं कुछ था, न अब कुछ हो लिया हूँ।
बस मैं इक दिवालिया हूँ, दिवालिया हूँ।

कला की उत्पत्ति कोमलता से है और कोमलता का जन्म अहिंसा की कोख से हुआ है।

× × ×

कष्ट पहुँचाना पशुता है, कष्ट सहना मनुष्यता है।

× × ×

हुल्लड़बाजी और सैनिकता दो अलहदा चीज़ें हैं। हुल्लड़बाज़ भय-प्रदर्शन में विश्वास रखता है, मनमानी और धाँधली का पूजक होता है; इसके विपरीत सैनिक व्यवस्था, अनुशासन और नियम-पालन को मानता है एवं कुरबानी पर विश्वास रखता है। हुल्लड़-बाज़ समाज का फोड़ा है और सैनिक ढाल।

× × ×

हुल्लड़बाजी के सामने सिर झुकाना मनुष्यत्व को खोना है; सैनिक के पैर पूजना मनुष्यता को बढ़ाना है।

× × ×

निर्बल जब भला आदमी होता है तो उसके बल 'राम' हैं; किन्तु जब दुर्जन निर्बल होने लगता है तो गुस्सा और गाली उसका बल होता है। जब दलील का दिवाला निकल जाता है तो हुल्लड़-बाज़ गाली का सहारा लेता है।

× × ×

हुल्लड़बाज़ी मानसिक शरारत से पैदा होती है। जब गंवार उसके शिकार होते हैं तो हुल्लड़बाज कहलाते हैं।

कृतज्ञता लेकर देना चाहती है और कृतघ्नता लेना, चूसना और ऊपर से गाली देना अपना जन्मसिद्ध अधिकार समझती है।

× × ×

विश्वासशील कभी मूर्ख बन सकता है, पर उससे समाज की उतनी हानि नहीं होती, जितनी खुद उसकी; किन्तु संशयशील तो, बुद्धिमान् होने का ज्ञान रखते हुए भी, मूर्ख से अधिक अपनी और समाज की हानि करता है। विश्वासशील स्वयं जोखिम उठाकर दूसरे के साथ न्याय करना चाहता है, संशयशील अपनी रक्षा करके दूसरे के साथ सौदा करना चाहता है।

× × ×

गाँधी सीधा भी है और ऐंठू भी। उसके साथ सीधे चलें चलो तो एक दम में मीलों आपके साथ दौड़ता चला जायगा; और टेढ़े चले तो धेले-छदाम के लिए भी अड़ जायगा—सवाल चीज़ का नहीं, आपके दिल का है।

× × ×

जो दूसरों के बल पर चढ़ते हैं वे एक धक्के में ही धड़ाम से गिर जाते हैं; जो अपने बल पर चलते हैं वे आँधी और तूफ़ान में से भी तीर की तरह सीधे चले जाते हैं।

× × ×

चारित्र्य से प्रतिष्ठा, मित्र, धन, सत्ता सब अपने-आप आ जाते हैं, मन, वचन और कर्म में जितनी ही अधिक एकता होगी उतना ही श्रेष्ठ चारित्र्य समझना चाहिए।

महत्त्वाकांक्षायें दो प्रकार की होती हैं—एक काम की, दूसरी नाम की। जब हमारे मन में यह इच्छा पैदा होने लगती है कि काम मेरे ही द्वारा हो, तब समझना चाहिए कि हम काम की महत्त्वाकांक्षा से नाम की महत्त्वाकांक्षा की ओर जा रहे हैं। अपने बारे में निराग्रह काम की महत्त्वकांक्षा का सब से बड़ा लक्षण है।

× × ×

बिल्ली खिसियाती है, कुत्ता पीछे भौंकता है और शेर सामने टटक कर आता है।

× × ×

सिद्धान्त क्या है? अनुभूत नियम। सिद्धान्त की हँसी उड़ाना अनुभव और नियम की हँसी उड़ाना तथा अपनी लघुता का परिचय देना है।

× × ×

"मित्रो, मेरी तारीफ़ मत किया करो। अपनी उदारता से मुझे शर्मिन्दा न करो। मेरी बुराइयाँ मुझे बताओ, जिससे मैं आपकी मित्रता के अधिक योग्य साबित हो सकूँ।"

× × ×

आप मुझे चिढ़ाते हो, जोश दिलाते हो, उभाड़ते हो, शर्मिन्दा करते हो; मुझे गुस्सा आता है, मगर मैं रोक लेता हूँ, एक ही क्षण में आपकी ओर देखकर हँस पड़ता हूँ—बताइए, बहादुर कौन है?

आप मुझे गाली देते हो, लोगों में मेरी बुराई करते फिरते हो, मुझे मिटाने की तरकीबें सोचते रहते हो, मेरे दिल में बदले की भावना जगती है, पर मैं अपने मन को समझाकर आपसे प्रेम करने की चेष्टा करता हूँ—कहिए, बहादुर कौन है।

× × ×

आप मेरा धन लूट ले जाते हो, मुझे दर-दर का भिखारी बना देते हो, मेरी जमीन जायदाद हजम कर लेते हो, मैं आपको कुचल डालने की तैयारी करता हूँ, फिर सोचता हूँ और आपको दण्ड के बजाय दया का पात्र समझने लगता हूँ—इसमें कौन बहादुर है?

× × ×

आपने मुझे जेल में डाल दिया, बेतें लगवाईं, चक्की पिसवाई, सड़ा गला अन्न खाने को दिया, मेरे मन में प्रतिहिंसा उठी कि तहस-नहस कर डालूँ, फिर अपनी मनुष्यता याद आई, आपकी कुबुद्धि पर आत्मा से क्षमा याचना की—इसमें किसकी बहादुरी रही?

× × ×

आपने मेरे कलेजे में खंजर भोंक दिया, मेरे सीने में गोली मार दी—उफ् करके मरते मरते मैंने कहा—रे भाई, यह क्या बेवकूफी कर गये—परमात्मा आपको सुबुद्धि दे, आपका भला करे! अब आप बहादुर रहे कि मैं?

मैं लड़कियों को सावधान कर देना चाहता हूँ कि देश-भक्तों से भूल कर शादी न कर बैठना। क्योंकि, वास्तव में, वे पहले ही से शादी किये रहते हैं।

× × ×

जो कर चुकी हैं उनसे कहूँगा, सौतिया डाह को छोड़ देने में ही तुम्हारा हित है। तुम अपनी सौत के गले मिल जाओ, तुम्हारे पति तुम्हें सिर पर उठाकर नाचेंगे।

× × ×

जो मेरी बुराई फैलाते हैं वे अपने और जगत् के हित-चिन्तक हों या न हों, मेरे हित चिन्तक ज़रूर हैं।

× × ×

बदला लेने से जिनको तृप्ति होती है उनको भगवान् ने साँप ही क्यों नहीं रहने दिया?

× × ×

जो दूसरों को धोखा देता है, वह सब से बढ़कर अपने आपको धोखा देता है।

× × ×

जो साँप तुम्हारे घर में घुस कर दूसरों को काटता रहता है, वह किसी दिन तुम्हें और तुम्हारे बाल-बच्चों को ज़रूर काट खायगा।

× × ×

यदि स्वयं मेरी सत्य पर अटल श्रद्धा नहीं है, तो मैं असत्या-चारियों को कैसे सत्य-भक्त बना सकूँगा?

मैं जैसे लोगों की संगत में रहूँगा, जैसों से सहयोग करूँगा, वैसा लोग मुझे क्यों न समझेंगे ?

× × ×

थोड़ी पूँजी को बहुत समझ लेने वाला अक्सर घटी खाता है, घटी में रहता है।

× × ×

झूठ बोलने वाला अक्सर दूसरे को बेवकूफ समझता है, पर वह वास्तव में दुहेरा बेवकूफ होता है।

× × ×

आप झूठ बोल कर बच सकते हो, जीते रह सकते हो, पर हार्दिक आदर और विश्वास नहीं पा सकते।

× × ×

यदि मैं गुण्डा और बदमाश हूँ तो कुछ लोग थोड़ी देर के लिए मुझसे डर और दब सकते हैं—पर मुझ से प्रेम तो हर्गिज़ नहीं कर सकते।

× × ×

मन में यदि तिरस्कार है, तो मौखिक विनय का क्या मूल्य ?

× × ×

जब आप बदला लेते हैं, तो अपने जी की जलन बुझाते हैं; जब क्षमा कर देते हैं, या सहन कर लेते हैं, तब आप मुझे जीत लेते हैं।

एक मित्र मुझे उलहना दिया करते हैं कि तुम अपने साथियों का साथ ज़रूरत से बहुत ज़्यादा देते हो। मैं अपने मन में उनसे कहता हू, मैं मित्रता नहीं करता, शादी करता हूँ।

× × ×

जब मैं 'अ' के साथ बहुत दूर तक जाता हूँ तब 'ब' को शिकायत नहीं होती, पर जब 'ब' के साथ जाता हूँ तो 'अ' मुझे इसी बात के लिए दोष देने लगते हैं !!

× × ×

जब किसी चीज़ में मन रंग जाता है तब प्राकृतिक धर्म भी बदल जाते हैं। मीरा के लिए विष अमृत हो गया।

× × ×

जब मैंने अपना आदर्श 'अंगूर' रक्खा था, तब मेरी मिठास लोगों को अच्छी नहीं मालूम होती थी; जब मैंने अपना आदर्श 'खाद' बनाया तो लोग उसकी सड़न और बदबू से घबराते हैं !

× × ×

जिनकी ज़बान बुरी होती है, उनका दिल अक्सर अच्छा होता है; ज़बान और दिल, दोनों की अच्छाई बिरलों में ही पाई जाती है।

× × ×

जब हमें आदर मिलने से खुशी हो, तो समझना चाहिए कि हम चढ़े बुखार में ठण्डा पानी पी रहे हैं।

जो मुझे कड़वी बात कहता है वह मुझे जागृत रखता है, जो मेरी तारीफ करता है वह अपनी गुण-ग्राहकता का परिचय देता है।

× × ×

बात का कड़वा होना एक चीज है और कड़वा लगना दूसरी बात है। कड़वा होने में कहने वाले का और कड़वा लगने में सुनने वाले का कोई दोष है।

× × ×

जब मैं कड़वी बात कहता हूँ तो इस बात की उपेक्षा करता हूँ कि सुनने वाले पर मेरी बात का वही असर होगा जो मैं डालना चाहता हूँ। मैं उस किसान की तरह हूँ जो बिना खेत की और बीज बोनेवाले औजार की हालत देखे ही, या उसकी उपेक्षा करके बीज बोता चला जाता है।

× × ×

यदि कोई बात मुझे कड़वी लगती है तो मुझ में उस में से सत्य को शान्ति के साथ ढूँढने और ग्रहण करने की शक्ति का अभाव है। यदि मेरी वृत्ति सत्य को ही शोधने की है तो टेढ़ी मेढ़ी, भद्दी, अच्छी, बुरी, कड़वी, मीठी, सब चीजों में से मैं सत्य ढूँढ लूँगा और उस अंश तक आनन्दित एवं कृतज्ञ हूँगा।

× × ×

पाखण्ड और कुशलता में जमीन-आसमान का भेद है। पाखंडी कहता कुछ है और करता कुछ है। कुशल वह है जो सत्य को सुस्वादु बनाने का प्रयत्न करता है।

कटुता सत्य में नहीं है । सत्य जिस साधन के द्वारा अभिव्यक्त होता है उसके कुसंस्कारों से उसका रूप दोष-युक्त हो जाता है। यदि सुनने वाला सु-संस्कृत है तो वह उस दोष के असर से अपने को बचा लेता है।

× × ×

जब हम सत्य को प्रिय और मृदु बनाते हैं तो हम सत्य को असत्य के रूप में पेश नहीं करते हैं; बल्कि अपने हृदय के प्रेम, मिठास, और मृदुता से उसे सरस और रमणीय बनाते हैं।

× × ×

सत्य को असत्य और असत्य को सत्य के रूप में पेश करना पाखण्ड है; परन्तु सत्य को सरस,मृदुल,मधुर बनाना कुशलता है।

× × ×

कटु सत्य में हिंसा और प्रतिहिंसा ही नहीं अभिमान भी है। प्रेम के अतिरेक से सत्य में तीखापन आ सकता है; कटुता नहीं।

× × ×

तीखापन व्याकुलता का, अधीरता का और कटुता द्रोह और द्वेष का चिन्ह है।

× × ×

यदि हम शरीर की नग्नता पसंद नहीं करते हैं तो मन की नग्नता को कैसे पसंद करेंगे ? हमारे मन के कई दूषित भाव ऐसे

हो सकते हैं जिसके दुष्प्रभाव से समाज को बचाना आवश्यक है। इसी से संयम और संस्कारिता की उत्पत्ति होती है।

× × ×

अपने को समाज के रोष से बचाने के लिए मैं अपनी किसी बुराई को छिपाऊँ, उस पर परदा डाले रखूँ, इसमें और समाज को अपने दोष से बचाने के लिए उस पर अंकुश रखूँ, इसमें भेद है। पहली अवस्था में मैं अपनी जान बचाता हूँ और समाज को जोखिम में डालता हूँ, दूसरी अवस्था में मैं समाज को बचाने के लिए स्वयं मर्यादा में रहता हूँ।

× × ×

यह मानना कि मैं तो नेकनीयत हूँ और दूसरा बदनीयत है इस बात को मंजूर करना है कि मैंने अपने दिल की अच्छाई को ही देखा है और दूसरे की बुराई को ही देखने में दिलचस्पी ली है। यह मेरी क्षुद्रता और असंस्कारिता का भी चिन्ह है।

× × ×

यह कहना कि संसार में अधिकतर लोग पाखण्डी हैं, जगन्नियन्ता में पाखण्ड का आरोपण करना है, अथवा यह जाहिर करना है कि मैंने पाखण्ड की ही खोज अधिक की है। जिस चीज की मैंने खोज की है वह मुझे मिली है।

× × ×

जो बाह्य साधनों पर विश्वास रखता है उसके सत्य और आत्मविश्वास में कमी है। बाह्य साधनों का सहारा लेना एक बात

है और उस पर आधार रखना दूसरी बात है । सहारा लेनेवाला उसके अभाव में भी विचलित नहीं होता । आधार रखने वाला ऐसी अवस्था में हतोत्साह और निराश हो जाता है ।

× × ×

मेरा कोई पाप—कोई बुरा भाव—ही मेरे अन्दर भय उत्पन्न करता है । कभी-कभी यह भय शंकाशीलता के रूप में सामने आता है ।

× × ×

यदि मुझे अपने बड़प्पन की चाह नहीं है तो दूसरों के बढ़ने से मुझे आनन्द होने के बजाय चिन्ता और भय क्यों होने लगता है ?

× × ×

तू बड़प्पन की चाह छोड़ दे, फिर देख कि तेरे वास्तविक विरोधी और शत्रु कितने रह जाते हैं ?

× × ×

बड़प्पन चाहने वाले के विरोधी भी अक्सर बड़प्पन चाहने वाले ही होते हैं । और मजा तो यह है कि दोनों एक-दूसरे पर बड़प्पन की चाह का इल्जाम लगाते हैं ! !

× × ×

क्या तेरा मन अशान्त है ? चिन्तित है ? भयभीत है ? तो देख तेरे मन में स्वार्थ की चाह तो नहीं है ? मिथ्याभिमान तो नहीं है ? आत्म-विश्वास की कमी तो,नहीं है ?

जबतक मेरी यह इच्छा है कि मेरा कार्य सफल हो—चाहे मेरे द्वारा चाहे किसी और के द्वारा—तब तक मेरी दृष्टि कार्य पर है, पर जब मैं यह चाहने लगता हूँ कि नहीं, वह मेरे ही द्वारा हो तब मैं अपने व्यक्तित्व को कार्य से अधिक महत्व देने लगता हूँ।

× × ×

जब मैं अपने व्यक्तित्व को अधिक महत्व देने लगता हूँ तो दूसरे व्यक्तियों के महत्व की ओर उपेक्षा होने लगती है, फलत. वे मेरे सहयोगी हों तो भी विरोधी हो सकते हैं; यदि इनमें भी अपने व्यक्तित्व को अधिक महत्व देने का भाव है तो फिर महत्वाकांक्षाओं का संघर्ष अवश्यम्भावी है; उसमें मेरा कार्य तो चकनाचूर हो जायगा।

× × ×

यदि तू किसी संस्था का अध्यक्ष या संचालक बनना चाहता है तो जबतक अपने साथियों के अधिकांश गुणों में तू उनसे बढ़कर नहीं होगा तबतक तुझे सफलता न मिलेगी।

× × ×

परन्तु यदि तू निःस्वार्थ, निरभिमान, दृढ़ लगन वाला, और चारित्र्यशील होगा तो तुझे दूसरे साथी ऐसे अवश्य मिल जायँगे, जो तेरी अन्य कमियों की पूर्ति करते रहेंगे, परन्तु तेरे लिए यह जरूरी है कि तू उनकी उस विशेषता की कद्र करता रहे।

यदि तुझे सफलता नहीं मिल रही है तो उसका कारण तू अपने अन्दर ही खोज। तुझे अपने अन्दर या तो सत्य की या अहिंसा की कहीं-न-कहीं कमी नज़र आवेगी।

× × ×

यदि मैं सत्य का सच्चा ग्राहक हूँ और यदि सत्य का कुछ-न-कुछ अंश प्रत्येक में विद्यमान् है तो प्रत्येक वस्तु उस अंश तक मेरे अनुकूल क्यों न होगी ?

× × ×

यदि मैं अपनी ओर से दूसरे के मन को भी पीड़ा न पहुँचने देने का ख़याल रखता हूँ तो दूसरा मुझे अपना शत्रु समझते हुए भी क्यों मेरी ओर न खिंचेगा ?

× × ×

दोनों बातों में यदि मुझे विपरीत अनुभव होता हो तो जरूर मेरी सत्यनिष्ठा और अहिंसा में कसर है। सत्य-निष्ठा का फल क्रिया-सिद्धि और अहिंसा प्रतिष्ठा का फल 'वैरत्याग' होना ही चाहिए।

× × ×

यदि मैं किसी कार्य या कर्तव्य में गफ़लत करता हूँ तो इसका अर्थ यह है कि मैंने उसे महत्त्वपूर्ण नहीं समझा है, या मैं आलसी हूँ।

× × ×

यदि किसी ने मेरी राय की परवा न की तो मुझे समझना चाहिए कि इनके नज़दीक मेरी राय का इतना ही मूल्य है। यदि

मैं चाहता हूँ कि वे उसका अधिक मूल्य आँकें तो मुझे उनके मूल्य की कसौटी समझ लेनी चाहिए।

× × ×

यदि मुझे खुद ही अपनी राय की परवा नहीं है, मेरे नजदीक ही अपनी बात का मूल्य नहीं है तो मुझे दूसरों से ऐसी आशा क्यों करनी चाहिए?

× × ×

यदि मैं बिना पूछे किसी को अपनी राय देता हूँ, यदि मना करने पर भी, उपेक्षित होने पर भी, मैं राय देता ही चला जाता हूँ तो इसके मानी यह है कि मैं खुद ही अपनी राय की कद्र नहीं करता हूँ। मूल्यवान् वस्तु को तो मनुष्य जतन के साथ संभाल कर रखता है और कंजूस की तरह खर्च करता है।

× × ×

प्रकृति के प्रत्येक कार्य में, प्रत्येक रचना में, प्रत्येक वस्तु में उप-योगिता है, लाभ है। हानि को छोड़ना और लाभ को ग्रहण करना ईश्वर-दत्त बुद्धि का सदुपयोग करना है।

× × ×

जितने उच्च सिद्धान्त हैं उन सब की उच्चता का आधार है उनकी उपयोगिता, उनसे पहुँचने वाला लाभ। यदि ऐसा न हो तो उनका कोई अर्थ और मूल्य नहीं है।

सत्य के मानी हैं उच्च से उच्च, श्रेष्ठ से श्रेष्ठ, पुण्य से पुण्य, स्थायी से स्थायी उपयोगिता, लाभ। यदि ऐसा न हो तो मैं सबसे पहले सत्य की निन्दा करूँगा।

× × ×

मित्रता करना हो तो दिल से करो। 'राजनैतिक मित्रता' करने वाले से ऐ मित्र सावधान रह!

× × ×

राजनैतिक मित्रता के मूल में सत्ता, मान, स्वार्थ, महत्वाकांक्षा इनमें से कोई भाव होता है। गुणाकर्षण से हुई मित्रता ही स्थायी और सुखदायी हो सकती है।

× × ×

बिना सिद्धान्त का जीवन बिना दीवार के मकान के सदृश है।

× × ×

सिद्धान्त-हीन से मित्रता करना अपने को बवण्डर में उड़ाना है।

× × ×

सिद्धान्तहीन दो तरह के होते हैं—एक मन की तरंगों पर चलने वाला और दूसरा सिद्धान्त-हीनता को उपयोगी एवं लाभकारी समझनेवाला। पहला हित चाहते हुए भी अहित कर बैठता है और दूसरा किसी का हित भी स्वार्थ साधन के लिए ही करता है।

× × ×

अक्सर स्वार्थ-साधु ही सिद्धान्तहीन होते हैं।

यदि तेरा मन अव्यवस्थित है, तो एक समय में एक ही काम करने की आदत डाल। बीच में कोई जरूरी और महत्त्वपूर्ण काम भी आ जाय तो बिना उस काम को छोड़े उसे पूर्ण करने का उद्योग कर।

× × ×

यदि मन में एक साथ कई विचार आते हों तो समझना चाहिए कि हम काम में तन्मय होना नहीं जानते। तन्मय न होने का अर्थ यह है कि हमें उस काम में दिलचस्पी नहीं है और दिलचस्पी इसलिए नहीं है कि हमने उसे न तो आवश्यक और न महत्त्वपूर्ण ही समझा है।

× × ×

हमें अपने को नापने का गज बड़ा और दूसरों को नापने का छोटा बनाना चाहिए। तब हम दोनों के साथ न्याय कर सकेंगे। यदि हम समान गज रक्खेंगे तो अपने साथ उदार और दूसरे के साथ कंजूस बनने की संभावना है। अपने लिए छोटा और दूसरे के लिए बड़ा गज़ रखना अपने को अहम्मन्य बनाना है और दूसरे के साथ अन्याय करने के मार्ग पर चलना है।

× × ×

जब मैं तेरी प्रशंसा करता हूँ तो तेरे गुणों से लाभ उठाना चाहता हूँ; जब तेरी निन्दा करता हूँ तो समाज को तेरे अवगुणों से बचाना चाहता हू।

यदि मैं सत्य का हामी हूँ, यदि मैं समाज-सुधारक हूँ तो मुझे अपनी निन्दा से क्यों नाराज़ होना चाहिए? निन्दक को दबाने का क्यों यत्न करना चाहिए?

× × ×

यदि मैं निन्दा नहीं सुन सकता हूँ तो या तो तारीफ़ सुनते-सुनते मेरी आदत बिगड़ गई है, या मैं अपने काम के लिए उतावला हूँ, या उससे मेरे काम के बिगड़ जाने का अन्देशा है। तीनों अवस्थाओं में यदि हम निन्दा सुनने का यत्न करेंगे तो हमारा लाभ ही होगा।

× × ×

जबतक निन्दा होती रहती है तबतक अपने को सुरक्षित समझो। जब तारीफों का ज़ोर हो तब जागरूक रहो और आँखें खोल कर चलो।

× × ×

हमेशा ऊपर देखते रहोगे तो नीचे वालों को भूल जाओगे। लक्ष्य स्थिर करते समय ऊपर देखो, चलते समय आगे देखो; कार्यक्रम बनाते समय चारों ओर देखो।

× × ×

यदि मैं दूसरे के किसी कार्य में कोई बुरी भावना, कोई स्वार्थ देखे बिना नहीं रह सकता, तो मुझे परमात्मा से अपनी हृदय-शुद्धि के लिए सच्चे दिल से प्रार्थना करनी चाहिए।

जब तुम से कोई सलाह लेने आवे तो उसके हित पर ध्यान रख कर ही उसे सलाह दो। अपनी किसी स्कीम या कार्यक्रम में उसका उपयोग कर लेने की दृष्टि से नहीं। वह अपने लिए आपसे सलाह लेने आया है, न कि तुम्हारे लिए।

× × ×

हम किसी आदमी पर या तो विश्वास रक्खें, या अविश्वास; या तो उसे भला आदमी समझें या बुरा; कभी विश्वास रखना और कभी अविश्वास, कभी अच्छा समझना और कभी बुरा, यह दोनों के लिए खतरनाक है।

× × ×

विश्वास रखकर मैं कभी-कभी मूर्ख कहलाना पसन्द करूँगा, किन्तु अविश्वास रखकर मैं सदा अशान्त, दुखी, चिन्तित रहकर अपनी हानि करना न चाहूँगा।

× × ×

विश्वास रखने पर मेरी हानि की ज़िम्मेवारी दूसरे पर होगी; अविश्वास से होनेवाली हानि का ज़िम्मेवार मैं हूँगा।

× × ×

विश्वास रखकर, बार-बार हानि उठाकर, मैं दूसरे की आत्मा को जाग्रत करूँगा, अविश्वास रखकर मैं अपनी आत्मा को मलिन करूँगा।

विश्वास रखने के मानी अन्धा बन जाना नहीं है। अविश्वास करने योग्य स्थिति होने पर भी विश्वास रक्खोगे तो लाभ ही अधिक होगा। हो सकता है कि इसके लिए संसार तुम्हें कभी मूर्ख कह दे; परन्तु इसके लिए तुम्हें लज्जित न होना पड़ेगा।

× × ×

यदि तुम्हें अपनी प्रशंसा सुनने में रुचि और निन्दा सुनने में अरुचि है तो समझ लो अभी पतन होने का भय है।

× × ×

यदि मुझे किसी पर दुःख है तो मेरे हृदय से उसके लिए प्रार्थना निकलनी चाहिए; परन्तु यदि किसी को सजा देने को जी चाहता है तो समझ लो कि क्रोध आया है।

× × ×

यदि तू सत्य को अपना मार्ग-दर्शक बनावेगा, तो बहुतेरी समस्याओं और जंजालों से बच जायगा। तुझे तपना तो पड़ेगा, परन्तु तेरी गति को कोई रोक न सकेगा।

× × ×

मनुष्य की कीमत उसके आचरण से होती है, न कि दावों से। परन्तु किसी का आचरण उसके दावे से घटकर हो तो उसे फौरन ही ढोंगी, झूठा मत कह दो—तबतक जबतक कि यह विश्वास न हो जाय कि वह सचाई के साथ प्रयत्न भी नहीं कर रहा है। अपने स्वभाव को आदर्श या दूसरे के नापने का गज

मत समझो। अपने को तथा दूसरे को किसी और कसौटी पर कसो और फिर दोनों के बारे में राय कायम करो।

X X X

वह कसौटी कोई ऐतिहासिक, पौराणिक या कल्पित आदर्श मनुष्य हो सकता है।

X X X

सत्य किसी पर ऊपर से ठूँसा नहीं जा सकता। वह तो भीतर से जगाया जाता है। हमारा सत्य-व्यवहार उसका सबसे बड़ा साधन है।

X X X

सत्य-शोधक एकांगी नहीं हो सकता। एक दल में बन्द नहीं हो सकता। संकीर्ण नहीं हो सकता। उसकी दृष्टि एकाग्र होगी, परन्तु सहानुभूति व्यापक होगी।

X X X

जब हम दूसरे को समझने का प्रयत्न करें तो हमें उसके दावे से उसके व्यवहार की तुलना करनी चाहिए, किन्तु जब हम उस पर टीका करने लगें तो अधिक अपनी ओर भी नज़र डाल लेनी चाहिए। अन्यथा हमारी टीका निन्दा बन जायगी।

X X X

दूसरे के प्रति तुम्हें उतना ही कठोर बनने का अधिकार है जितना अपने प्रति। यदि अपने प्रति अधिक कठोर बनने की प्रवृत्ति रक्खोगे तो न्याय की रक्षा अधिक कर सकोगे।

मुझे किसी बात का अधिकार है, इसके यह ज़रूरी मानी नहीं हैं कि लोग मेरे अधिकार-प्रयोग को भी सही मान लें।

× × ×

ज्यों-ज्यों तुम सत्य की ओर बढ़ते जाओगे त्यों-त्यों तुम्हें बाह्य साधनों की आवश्यकता कम प्रतीत होने लगेगी। तुम्हें दूर की बातें प्रत्यक्ष दीखने लगेंगी और तुम्हारे निश्चय में दृढ़ता आती चली जायगी।

× × ×

सहन करना एक गुण भी है और शस्त्र भी है। जब हम अपने सुधार के लिए सहन करते हैं तो वह एक गुण है और जब दूसरे के सुधार के लिए उसका प्रयोग करते हैं तब वह शस्त्र होता है।

× × ×

सहन करने से हमारा धीरज बढ़ता है और लोगों में हमारा पक्ष (Cause) प्रबल होता है। उचित बात के लिए हम जितना ही सहन करेंगे उतना ही लोकमत अधिक जाग्रत होगा।

× × ×

जो काम करो, अपना समझकर करो। उसमें तन्मय हो जाओ। सोचो कि इसे कैसे थोड़े समय, थोड़ी सामग्री से और भी अच्छी तरह कर सकते हैं, इससे न केवल तुम्हारी बुद्धि बढ़ेगी, बल्कि कला भी बढ़ेगी, काम उत्तम होगा और तुम्हारा यश बढ़ेगा।

बे-मन से काम करने—बेगार काटने—से तो काम न करना अच्छा है। इससे एक तो हमारी आदत ठीक रहेगी और दूसरा हमारे भरोसे रहकर अपना काम न बिगाड़ लेगा।

× × ×

दुश्मन भी हो तो कष्ट और आपत्ति के समय उसकी सेवा करो। यदि इतना न कर सको, तो कम-से-कम उस समय अपनी शत्रुता का बदला तो न निकालो। वीर कमज़ोर और दु:खी पर अपना हाथ नहीं उठाता।

× × ×

उच्च-हृदय मनुष्य के सामने हार में भी आनन्द आता है; परन्तु क्षुद्र के दिये मान से भी चित्त उलटा क्रुन्द हो जाता है।

× × ×

अव्वल तो किसी को कष्ट न पहुँचाओ। अनजान में अथवा मजबूरन पहुँच जाय तो दूसरी किसी बात में उसकी सेवा करके उसका परिमार्जन कर दो।

× × ×

जब किसी से मत-भेद हो जाय तो दूसरी बातों में उसकी विशेष सेवा करो जिससे एक तो वह यह न समझे कि मत-भेद के कारण वह मुझसे दूर हो गया है और दूसरे हमारे मन में भी पार्थक्य का भाव जमते-जमते अन्त को तिरस्कार की भावना न होने लगे।

अनुताप से बढ़कर हृदय-शोधन करनेवाली वस्तु नहीं। अनुतप्त मनुष्य को और दण्ड की आवश्यकता नहीं।

× × ×

एक सरकारी अफसर के सबूट चरणों पर एक बुढ़िया अपने बेटे को बचाने के लिए गिर पड़ी। उन्होंने मेरी ओर देखा। उनकी आँखों में गौरव था। मैं उनसे आँख न मिला सका। मेरी गर्दन झुक गई!

× × ×

जब मैं किसी छोटे और मामूली काम के लिए अपने किसी साथी से कहता हूँ तो वह मुझे इस कसौटी पर कसना चाहता है कि मैं खुद उसे क्यों न करूँ? जब खुद करने लगता हूँ तो सनकियों में गिनती होती है॥

× × ×

किसी मनुष्य का महत्त्व समझना हो तो उसे उसके दृष्टि-बिन्दु से देखो। जब सत्य का निर्णय करना हो अथवा उसका सहयोग करना हो तो अपने दृष्टि-बिन्दु से उसका मूल्य आँको।

× × ×

मनुष्य को उसके आवेश में किये गये कार्यों से जज मत करो। उस समय वह दूसरा ही मनुष्य होता है।

× × ×

स्वदेशी-धर्म स्वतन्त्रता-सिद्धान्त का अनिवार्य परिणाम है। स्वदेशी एक तो हमें उद्योगी और स्वावलम्बी बनाता है और दूसरे

अन्य देश वालों से कहता है कि तुम हमारे हमलों से निःशंक रहो।

× × ×

अब हमें अपने ही देश की वस्तुओं से अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करनी होगी तो हमें अवश्य उद्योगी बनना होगा। जब दूसरे देशों की चीजें न मंगावेंगे तो हमें अपने ही बल पर खड़ा होना होगा।

× × ×

समता के मानी आना-पाई और सेर-छटाँक की भाषा में समता नहीं, बल्कि अधिकारों की समता। समाज में प्रत्येक व्यक्ति के मानवी अधिकार समान होने चाहिएँ। उनका उपभोग तो मनुष्य अपनी योग्यता के अनुसार ही कर सकता है।

× × ×

मनुष्य चूँकि प्रणाली का विधाता है: इसलिए केवल प्रणालियों के परिवर्तन से समाज का सुधार नहीं हो सकता। मनुष्य को मनुष्य के रूप में भी अधिक अच्छा और ऊँचा बनाने का यत्न करना चाहिए।

× × ×

प्रणालियाँ यद्यपि व्यक्ति और समाज के सुधार के ही लिए बनाई जाती हैं तथापि उनसे लाभ या हानि पहुँचाना व्यक्ति के ही बहुत-कुछ अधीन है। इसलिए व्यक्ति जितना ही ऊँचा और अच्छा होगा उतनी ही प्रणाली अच्छी होगी और उतना ही उनसे लाभ भी अधिक होगा।

मनुष्य पशु से भी गया बीता कैसे हो जाता है —यह देखना हो तो क़ैदी बन कर किसी जेलख़ाने में देख लो।

× × ×

बड़े-बड़े कल-कारख़ानों से मजूरों का कितना हित होता है, यह देखना हो तो बम्बई के मजूरों के रहने का स्थान और उनका जीवन जाकर देख आओ। तुम्हारा दिल कह देगा कि गाँव में ये मनुष्य थे—यहाँ वे मनुष्यता की शर्म बन गये हैं!

× × ×

कवि निरंकुश है। कहते हैं, निरंकुशता उसका विशेषाधिकार है। यह सनातन से चला आया है। इसलिए उसे छीनना नहीं चाहिए। अच्छा साहब! तो फिर वह अपने कपड़े उतार कर फेंक देगा तो आपको रंज तो न होगा?

× × ×

निरंकुश वह सदाचार का भंग करने में नहीं है, काव्य और छन्दशास्त्र सम्बन्धी नियमों के पालन में है। सदाचार की रक्षा समाज के प्रत्येक व्यक्ति का सर्वोपरि धर्म है।

× × ×

'पर सदाचार तो सदा एक नहीं होता?'—ठीक है। तो जो सदाचार हानिकर हो गया हो उसे बदलवा दो; परन्तु निरंकुश बनने का अधिकार न लो।

'पर हम तो सत्याग्रही हैं !'—आपको बधाई है । किन्तु जब आप किसी सदाचार को बदलवाने के सब वैध उपायों का अवलम्बन करके असफल हो चुके होंगे तभी आपको सत्याग्रह करने का अधिकार है ।

× × ×

सदाचार आखिर क्या है ? समाज के लिए उपयोगी समझे जाने वाले नियम । यदि यह ठीक है तो फिर उनका ंग क्यों ?

× × ×

फिर कवि बनने के मानी यह तो नहीं है कि वह मनुष्य न रहा, सभ्य न रहा, सज्जन न रहा । कवि होने के मानी सिर्फ इतने हैं कि वह अपनी प्रतिभा के द्वारा समाज की सेवा करता है । उसकी प्रतिभा के विकास के लिए आवश्यक अनुकूलतायें उसे अवश्य मिलें—परन्तु वह सदाचार का भंग करने के लिए निरंकुश नहीं बन सकता ।

× × ×

जिस कवि में सचमुच प्रतिभा होगी वह तो अपने-आप समाज की धारा को बदल देगा । वह आपसे शिकायत करने नहीं आवेगा कि आपने निरंकुश नहीं होने दिया—इसलिए मेरी प्रतिभा रुक गई ।

× × ×

प्रेम और वैर छिपाये नहीं छिपते । प्रेम-कलह दोनों की आत्मा का परिशोधन करके मिलाता है । वैर कलह दोनों को हिंसा-प्रतिहिंसा के कीचड़ में लपेटे रहता है ।

हिंसा का सम्बन्ध आत्मा से नहीं, शरीर और मन से है। किसी के शरीर और मन को कष्ट न देना ही अहिंसा है। आत्मा के गुणों को शरीर और मन पर लागू करना अज्ञान है।

× × ×

सामाजिक दृष्टि से कष्ट-सहन, त्याग और संयम क्या है? जो अपने कर्तव्य का यथावत् पालन नहीं करते हैं उनके बदले में अपने पर लिया हुआ अधिक कर्तव्य का बोझ।

× × ×

त्याग और संयम करने वाला तो व्यक्तिगत लाभ की ही दृष्टि से करे; परन्तु अन्य लोगों को चाहिए कि वे उसे सामाजिक दृष्टि से देखें।

× × ×

समाज में प्रत्येक मनुष्य को अपने ज़िम्मे का काम करके अधिक काम करने की तैयारी रखनी चाहिए। तब जाकर सब कार्य समुचित रूप से हो सकता है। ऐसा न करने से ही अधिक समझदार और जिम्मेवार लोगों को अपने पर अधिक बोझा लेना पड़ता है।

× × ×

जब मैं दूसरों की बात मान लेता हूँ तो 'नरम' और 'ढीला' कहलाता हूँ। जब अपनी बात पर अड़ा रहता हूँ तो 'स्वेच्छाचारी' और 'अभिमानी' की पदवी मिलने लगती है !!

× × ×

दुनिया की निन्दा-स्तुति के भरोसे चलने वाले की मौत है। अपने हृदय पर हाथ रख कर चल !

तू स्वयं अपना आलोचक, निन्दक, और चौकीदार बन।

× × ×

एक मित्र ने अपनी तारीफ-सी करते हुए, कुछ गौरव अनुभव करते हुए कहा—'अपन तो जहाँ कहीं रहे हैं लड़ते ही रहे हैं। संग करना ही अपना काम है।' मैंने मन में कहा—'स्वभावो हि दुरति क्रमः।' इसमें यदि मिथ्याभिमान नहीं, तो शिक्षाग्रहण करने की रुचि का अभाव अवश्य है।

× × ×

निरुत्तर करना या उपहास करना मनुष्य को समझाने का उपाय नहीं है। निरुत्तर करके हम उसे कम से कम आत्म-निरीक्षण में तो लगा सकते हैं; परन्तु उपहास करके हम सिर्फ उसे नीचा दिखा सकते हैं और अपने से दूर धकेल सकते हैं।

× × ×

सत्य एक हकीकत है, जिसे अनुभव करना है, अहिंसा एक वृत्ति है जिसका विकास करना है। सत्य जगत् में सर्वत्र व्याप्त तथ्य का नाम है और अहिंसा जगत् के प्रति अपने सम्बन्ध या व्यवहार का सर्वोच्च नियम है।

× × ×

प्रार्थना अन्तःकरण का स्नाव है। स्फूर्ति, पवित्रता, बल उसका फल है।

× × ×

प्रार्थना का अर्थ है उच्च नियमों, सद्गुणों, उच्च आदर्शों का स्मरण।

ईश्वर-प्रार्थना का अर्थ है—जगन्नियन्ता से अपने विकास की चाहना। अपनी कमियों की पूर्ति की याचना। हम अनुभव करते हैं कि हमारे अंदर कई दुर्बलतायें हैं, कमियाँ हैं। हम अनुभव करते हैं कि उनकी पूर्ति सर्वथा हमारे बस की बात नहीं है। कहीं न कहीं से उनकी पूर्ति होती, हुई हम देखते हैं। उसी अदृश्य शक्ति का नाम ईश्वर है

× × ×

आस्तिक होने के मानी यह हैं—

(१) यह मानना कि मनुष्य से भी बढ़कर कोई शक्ति या नियम संसार में है और उसी के बल पर संसार-चक्र चल रहा है।

(२) यह विश्वास करना कि कर्म का फल मनुष्य को अवश्य मिलता है।

(३) यह श्रद्धा रखना कि यद्यपि आज मैं पतित हो गया हूँ तथापि कभी न कभी मेरा उद्धार अवश्य होगा।

× × ×

सत्य जीवन में अनुभव करने की वस्तु है; बुद्धि से समझने की नहीं। बुद्धि की जिज्ञासा ने बड़े-बड़े दर्शन शास्त्रों को जन्म दिया है—फिर भी वे सत्य का अनुभव कराने में समर्थ नहीं हुए हैं।

सत्य एक है तो फिर उसके प्रतिपादकों में इतनी मत भिन्नता क्यों ? इसका उत्तर यह है कि सत्य का जितना और जैसा अनुभव उन्होंने किया वैसा और उतना उन्होंने वाणी के द्वारा प्रकट करने का यत्न किया है। वाणी में इतनी शक्ति नहीं है कि वह सब अनुभव को प्रदर्शित कर सके। इस कारण—अनुभव और सामर्थ्य की भिन्नता—ने इस मत भेद को जन्म दिया है।

× × ×

यह नहीं कह सकते कि ज्ञान का अन्त आ चुका, सिर्फ इतना ही कह सकते हैं कि अब तक के ज्ञान का निचोड़ यह है।

× × ×

ज्ञान की व्यापकता में हम जितना ही पटेंगे उतना ही मत-भेद दीख पड़ेगा—उसके मूलाग्र की ओर जावेंगे तो एक बिन्दु पर पहुँच जायगे।

× × ×

व्यापकता और विस्तार में अशान्ति, मूलाग्र में शान्ति मिलेगी।

× × ×

यदि किसी भौतिक वस्तु की चाह मुझे नहीं है तो मुझे अनुचित रूप से किसी के सामने दबने की क्या आवश्यकता है ?

× × ×

सत्य-शोधक पराजय और असफलता से हतोत्साह नहीं होता। वह उनके मूल को खोजता है और उसे अपने अन्दर पा लेने पर

बूने उत्साह से उसे दूर करने का यत्न करता है । उसे तभी तक अशान्ति रहती है जब तक वह उसे दिखाई नहीं दिया है ।

× × ×

किसी काम के श्रेय पाने की अभिलाषा के मानी हैं अपने व्यक्तित्व को मान्य कराने की इच्छा ही नहीं, बल्कि उसमें रस भी ।

× × ×

जबतक इस रस पर हमारी निगाह है तबतक एक तो दूसरी त्रुटियों की ओर से हम उदासीन रहेंगे और दूसरे उस काम में भी हमारा उत्साह तब रहेगा जब उसका श्रेय मिलता रहेगा ।

× × ×

यदि मुझे अपने कार्य को सफल बनाने की चिन्ता है तो मुझे अपनी त्रुटियों की ओर से ग़ाफ़िल न रहना चाहिए ।

× × ×

प्राप्त के सौंपे काम से बचने के लिए कहीं मैं अपने प्रति तो बेईमान नहीं हो रहा हूँ ?

× × ×

आचरण की सुसंगति के मानी यह नहीं है कि मनुष्य वैसे ही काम बारबार करता रहे; बल्कि यह है कि वह अपने निश्चित पथ से इधर उधर न भटक जाय ।

× × ×

परिवर्तन का नाम अ-संगति नहीं है । परिवर्तन यदि मुझे अपने लक्ष्य की ओर न ले जाता हो तो असंगति हो सकती है ।

असंगति का अर्थ है कभी इस रास्ते और कभी उस रास्ते जाना।

× × ×

अपरिवर्तन के मानी हैं अचलायतन। अचलायतन के मानी हैं बुद्धिहीनता और जीवन शून्यता।

× × ×

चित्तवृत्ति को सदा आनन्दित रखना एक बात है; और जीवन आमोद-प्रमोद में बिताना दूसरी बात है।

× × ×

आमोद-प्रमोद जीवन के आरम्भ का उफान है।

× × ×

सहानुभूति और उपेक्षा छिपी नहीं रह सकती। बाहर से उदासीन रहने पर भी सहानुभूति भीतर से जीवन-रस भेजती रहती है; और उपेक्षा उस रस के सोते को सुखा देती है। इसकी क्रिया चाहे दिखाई न दे, पर फल से उनकी प्रतीति अवश्य हो जाती है।

× × ×

यदि तुम किसी की बात शान्ति और धीरज के साथ सुन लोगे तो उसका आधा दुःख दूर हो जायगा। यदि सहानुभूति के साथ सुनोगे तो उसका तुम्हारे पास आना निरर्थक न होगा।

× × ×

सहानुभूति का अर्थ है उसके दुःख को अपना दुःख समझने लगना। यदि सहानुभूति है तो फिर यह असम्भव है कि मैं उसके दुःख को दूर करने का कुछ भी प्रयत्न न करूँ।

मनुष्य को देखकर व्यवहार कर। सबको एक लाठी से मत हाँक।

× × ×

पर इसका यह अर्थ नहीं है कि सच्चे के साथ सच्चाई का, दुष्ट के साथ दुष्टता का व्यवहार किया जाय। बल्कि यह है कि सदाचार और सत्याचार भी सामने वाले की मनोवृत्ति और संस्कृति देखकर किया जाय।

× × ×

अपने गुणों के बल पर मान चाहना एक बात है और हठ-बल पर चाहना दूसरी बात है। गुण यदि है तो लोग उसे मानेंगे ही। हठ-बल पर यदि मान मिला भी तो देने वाले की वह दया है।

× × ×

दया करना ऊँचा उठना है, परन्तु दया-पात्र बनना अपने तेज को कम करना है।

× × ×

यदि मुझ में ज़रा भी कृतज्ञता है तो मैं उपकारकर्त्ता के प्रति विनम्र रहूँगा। कम से कम उसका अपमान तो नहीं करूँगा।

× × ×

विरोध और अपमान एक चीज नहीं है। विरोध बुरे कार्य और बुरे विचार का होता है; परन्तु अपमान तो सारे व्यक्ति का होता है।

अपमान करने के मानी यह है कि तू तुच्छ है और मैं बड़ा हूँ—मैं तुझे कोई चीज नहीं समझता।

× × ×

मनुष्यता के कानून में अपमान करना मना है। विरोध, संग्राम, प्रहार तो उसमें जायज है; किन्तु अपमान नहीं। विरोध, संग्राम, प्रहार करने से हमारा पुरुषार्थ, पराक्रम, तेज सूचित होता है, किंतु अपमान करने से हमारे हृदय की क्षुद्रता।

× × ×

सच्चा मित्र वह है जो मेरे शारीरिक और मानसिक दुःखों की चाहे उपेक्षा कर जाय, परन्तु मेरी आत्मा के पतन को सहन न करे।

× × ×

मेरे खिलाफ़ तू षड्यन्त्र क्यों रचता है? मेरे पास अपना तो कुछ है नहीं; और यदि तुझ में सच्चाई और योग्यता है तो फिर षड्यन्त्रों की क्या आवश्यकता?

× × ×

तू अपने गुणों पर भरोसा रख; मेरी कमजोरियों पर नहीं। तेरे गुण सदा रहेंगे, मेरी कमजोरियाँ सदा रहने वाली नहीं हैं।

× × ×

यदि तुझे बदनाम करने की धमकी दी जाय तो तू अपने अन्तःकरण पर हाथ रख। जितनी सचाई तुझ में होगी उतनी ही

निर्भय धड़कनें उसमें दिखाई देंगी। यदि तू सच्चा है तो कह दे—पहले बदनामी कर आओ, फिर मैं तुम से बातें करूँगा।

X X X

प्रेम भी यदि धमकी ले कर तेरे सामने आवे तो उसे बैरंग वापिस कर दे। धौंस सहने से बरबाद हो जाना अच्छा है। धौंस सहना रोज-रोज़ बरबाद होने का निमन्त्रण देना है।

X X X

यदि मैं मूर्ख हूँ, तो मेरा उपहास करके तू दुष्टता का परिचय क्यों देता है ?

X X X

उपहास करना दूसरे की हानि पर अपना मनोविनोद करना है।

X X X

जिस में तुझ अकेले का ही लाभ है उसे एकाएक अच्छाई समझने की भूल न कर।

X X X

यदि तुझे कोई बीमारी है, यदि तुझ में कोई ऐब है, तो उस को दूर करते समय होने वाला दुःख तुझे ही भोगना पड़ेगा। मेरे दिल में उस समय कितनी ही हमदर्दी हो, उससे मैं चाहे मर भी जाऊँ तो भी उतना दुःख तो तुझे ही भोगना पड़ेगा। तू उसके लिए सदा तैयार रह।

X X X

और जब कि दुःख भोगे बिना छुटकारा ही नहीं है तो फिर क्यों दूसरे की दया का भिखारी बनता है ?

जब मैं दुनियावी महत्वाकांक्षाओं में लिप्त रहता हूँ तब मुझ में वह मस्ती रहती है जो कि अभिनय करते समय किसी नट में रहती है, परन्तु जब मैं उनके प्रभाव से अपने को हटाकर उन्हें देखता हूँ तो मुझे वह आनन्द आता है जो किसी नाटक के अभिनय को देखते हुए प्रेक्षक को होता है।

× × ×

जब मैं उनमें लिप्त रहता हूँ तो हर्ष-शोक, आशा-निराशा, चिन्ता-भय के धक्कों से जर्जर हो जाता हूँ, जब उनसे अपने को अलग कर लेता हूँ तो मस्त होकर गाता हूँ—

"भवसागर सब सूख गया है फिकर नहीं मुझे तरनन की।"

× × ×

ओ हो—निरपेक्षता और निराशा सचमुच ईश्वरी वरदान है। इनमें कितनी निश्चिन्तता, कितनी शान्ति, कितना बल, कितनी स्थिरता, कितनी अदम्य कार्यशक्ति भरी हुई है!

× × ×

जबतक आशा और अपेक्षा तेरे हृदय पर अधिकार किये हुए हैं तबतक दुःख तेरे भाग्य में से मिट नहीं सकता। अपमान और तेजोभंग तुझे जगह-जगह तैयार मिलेंगे।

× × ×

तू जगत् में इस आशा और अपेक्षा से प्रवेश मत कर कि मेरी जगह-जगह चाह होगी, लोग मुझे मानेंगे और पूजेंगे, चारों ओर

मुझे सहायता और सहयोग मिलेगा; बल्कि इसके विपरीत हृदय को इस बात के लिए तैयार करके इस यात्रा में क़दम बढ़ा कि यहाँ विरोध, कठिनाई, कष्ट सहन, कटूक्ति, निन्दा मिलेगी।

× × ×

परन्तु यदि तू सच्चा है, धुन का पक्का है, और जगत् के हित में ही तू ने अपना जीवन लगा दिया है तो ये विघ्न, कठिनाइयाँ, आदि अधिक समय न ठहर सकेंगे; तेरे सत्कर्मों का सुफल तो अवश्य ही मिलेगा; परन्तु यदि तू परिणाम पर दृष्टि रखने लगेगा तो झंझटों में फँसता जायगा और संभव है कि अन्त में निराशा में तेरा दुखदायी अन्त हो।

× × ×

किन्तु यदि एक बार परिणाम सोचकर कार्यारंभ कर दिया है तो फिर तू अपने कर्तव्य-पालन में ही निमग्न रह। तीर की तरह सीधा चला जा और पहाड़ की तरह कठिनाइयों और जगत् की भर्त्सनाओं के सामने अड़ा रह।

× × ×

इतने हल्के दिल से संसार में प्रवेश करने वाले ऐ मेरे लाडले युवक!—आगे चलकर तुझे जो कड़वी घूँटें यहाँ पीनी पड़ेंगी, उनका विचार करके मुझे रहम आने लगता है। परमात्मा तेरी रक्षा करें—संसार की अग्नि-परीक्षाओं में से तुझे उत्तीर्ण होने का बल दें।

यदि तेरे जीवन का कोई आदर्श नहीं है, कोई सिद्धान्त नहीं है, कोई महत्वाकांक्षा नहीं है, तो सम्भव है कि तू संसार की कड़ी परीक्षाओं से बच जाय; किन्तु याद रख तू उसकी प्रताड़नाओं से किसी प्रकार नहीं बच सकता।

× × ×

मैं बहुत बहस करता हूँ, हृदय के पूरे बल से दलीलें देता हूँ, इस तरह जोश से बोलता हूँ मानों न बोलने से दुनिया डूबी जाती है, या मेरा घर जला जाता है, या मेरा बच्चा मरा जाता है—फिर भी अन्त में मेरे सुनने वाले, या मुझसे बहस करने वाले इस भाव से चुप होने लगते हैं कि इससे कौन उलझे, तो बताओ मैंने क्या कमाई की?

× × ×

कभी-कभी अहंकार भी बहुत नम्र बन जाता है, किन्तु वह क्रोध में, दूसरे को नीचा दिखाने के लिए। इस नम्रता से चित्त को शान्ति नहीं मिलती, न दूसरे का ही समाधान होता है उल्टा अपने दिल में दिन-रात होली जलती रहती है।

× × ×

मैं किसी आदमी के पास तीन उद्देश से जाता हूँ—या तो उसकी सहायता करने या उससे सहायता लेने, या उससे कुछ सीखने। यदि उसकी सहायता करने गया हूँ तो मेरी सहायता ऐसी न होनी चाहिए कि उल्टा उसका बोझ बढ़ जाय,

[यदि उससे सहायता लेने गया हूँ तो उसके सिर पर चढ़ कर, उसका बाप बनकर, मैं उससे सहायता नहीं ले सकता, यदि सीखने के लिए गया हूँ तो सुनूँ और विचारूँ अधिक; खण्डन-मण्डन कम से कम करूँ।

× × ×

किन्तु कई बार होता यह है कि मैं जाता तो हूँ सीखने, परन्तु सिखाने लगता हूँ !!

× × ×

यदि मैं सिद्धान्तों पर ही अड़ता रहूँ तो मेरी तेजस्विता, बढ़ेगी; यदि अड़ना ही मैंने अपनी आदत बना ली तो उपेक्षा, अनादर मुझे पुरस्कार में मिलता रहेगा।

× × ×

यदि सिद्धान्त मेरे सामने स्पष्ट नहीं हैं, यदि सिद्धान्तों में मैं पक्षपात हूँ, तो मैं किसी भी संस्था, संगठन, या दल का संचालक नहीं बन सकता। मेरे साथी मुझ से ऊब जायँगे।

× × ×

यदि अपने किसी रिश्तेदार की बुरी बात का मैं विरोध नहीं करता हूँ तो या तो मैं उनका हितैषी नहीं हूँ, या डरपोक हूँ।

× × ×

प्रसिद्धि, आदर, को अपनी सेवाओं का अच्छा पुरस्कार मान-कर, ऐ मित्र, तू सेवा की क़ीमत इतनी कम क्यों करना चाहता है ?

सेवा का सब से बढ़िया पुरस्कार है आत्म सन्तुष्टि। उससे बढ़ कर पुरस्कार है उस सेवा में प्रकृत सहायता, सच्चा सहयोग।

X X X

प्रेम उत्सुक होता है; ज्ञान विरक्त।

X X X

प्रेमी के लिए रस है, आनंद है। ज्ञानी के लिए मनोरंजन है, खेल है।

X X X

प्रेम डूबता रहता है; ज्ञान तैरता रहता है।

X X X

इङ्गलैण्ड और भारत दोनों को पीड़ा है, इङ्गलैण्ड का फोड़ा पक रहा है और भारत का नव जन्म हो रहा है।

X X X

सिद्धान्त सड़क है, और व्यक्ति उस पर चलने वाला। मेरे लिए सिद्धान्त इस कारण बड़ा है कि मेरे जाने का पथ वही है। व्यक्ति इसलिए बड़ा है कि उसीने मुझे यह पथ दिखाया है और वही आज भी मेरा हाथ पकड़ कर उस पर ले जा रहा है।

X X X

ईश्वर इसलिए बड़ा है कि व्यक्ति को अपनी सत्ता मर्यादित मालूम होती है, व्यक्ति इसलिए बड़ा है कि उसने ईश्वर को पहचाना है।

X X X

व्यक्ति इसलिए बड़ा है कि उससे समाज बना है और समाज इसलिए बड़ा है कि वह व्यक्ति को ऊँचा उठने में सहायता देता है।

हीरा इसलिए बड़ा है कि उसका मूल्य अधिक है; जौहरी इसलिए बड़ा है कि वह हीरे को पहचानता है।

× × ×

यदि हम नीयत पर विश्वास रख सकें तो ग़लतफ़हमियाँ बहुत कम हों, यदि हों भी तो अधिक समय तक न टिकें।

× × ×

दुर्भाव की शंका से उत्पन्न हुई ग़लतफ़हमी तब मिट सकती है, जब या तो आप दूसरे की उस कसौटी पर सोलह आने साबित होइए, जो उसने आपकी भाव-शुद्धि के लिए बना रक्खी है; या चुपचाप उसका हित-साधन करते चले जाइए। कुछ समय के बाद वह अपना भ्रम समझ लेगा।

× × ×

यदि तुझे जल्दी है तो पहला मार्ग अंगीकार कर, यदि आज ही इसके लिए तैयार नहीं है तो दूसरा रास्ता ग्रहण कर।

× × ×

यदि तू इस बात से ख़ुश है कि मैं तेरे बल, योग्यता और गुणों की बड़ाई और मान लोगों में करता रहूँ तो यह बिलकुल आसान है, परन्तु क्या प्रेम का मतालबा यही होता है? क्या साथीपन की यही चाह है?

× × ×

यदि मैं तेरा सच्चा शुभैषी हूँ तो मुझे उचित है कि मैं तुझे इन प्रलोभनों से बचाऊँ।

"तो फिर तुम अपने को इस स्थिति में क्यों डाले हुए हो ?"

× × ×

प्यारे, चाहना एक बात है और मिलना दूसरी बात है। सांसारिक वैभव—मानादर—जो चाहता है, उससे दूर जाता है और जो नहीं चाहता उसके पीछे पीछे फिरता रहता है।

× × ×

मुझे तेरा प्रेम खोकर मान्यता प्राप्त करने में सुख और स्वाद नहीं है। यह घाटे का व्यापार मैं हरगिज़ न करूँगा।

× × ×

हाँ, मैं व्यापारी हूँ—सद्गुणों का, सज्जनों का। इन्हें मैं बड़ी से बड़ी क़ीमत देकर भी खरीदता हूँ और जतन से अपने 'खज़ाने' में रखता हूँ।

× × ×

लेकिन मेरे यहाँ बिक्री नहीं होती है। उधार देने का रिवाज तो रक्खा है।

× × ×

कुछ मित्र कहते हैं, राजस्थान में कोई नेता नहीं है। मेरा अनुभव यह है कि यहाँ नेता ही बहुत हैं।

× × ×

यदि उनका कहना सही है, तो फिर कहना होगा कि उन्हें नेता की चाह नहीं है। जहाँ चाह होती है वहाँ वह चीज़ कहीं न कहीं से आ जाती है।

जब परस्पर-विरोधी कर्तव्य, परस्पर-विरोधी स्नेह, परस्पर-विरोधी हिताहित की समस्यायें तुझे असमंजस में, दुविधा में या चिन्ता में डालती हों तब सत्य के बराबर तेरा अचूक और सुगम पथदर्शक नहीं है। तू दृढ़ता से सत्य को पकड़ रख, बौछारों, कठिनाइयों, स्नेह-भंग आदि से मत डर। तुझे न केवल मार्ग सूझेगा, बल्कि शान्ति भी मिलेगी और स्नेह भंग भी अधिक समय तक न ठहर सकेगा।

× × ×

जब मैं स्नेह, मोह, लाभ से प्रभावित होता हूँ तो जिधर जाता हूँ उधर से काँटे चुभने लगते हैं। जब सत्य की शरण जाता हूँ तो या तो काँटे चुभने बन्द हो जाते हैं, या उन्हें हँसते हँसते सहने का बल मिलने लगता है।

× × ×

यदि तुझे राजनीति और समाज-नीति में क्षुद्रता लगती है तो तू राजनीति और समाज-कार्यों से हट कर यह कैसे कर सकता है?

× × ×

लोग तेरे दावे के अनुसार तुझे कड़ी कसौटी पर कसेंगे। बड़े-बड़े दावे करते समय तो तुझे बड़ा आनन्द आता था, बहुत उत्साह होता था, पर जब तू परीक्षा के लिए आग में तपाया जाता है, तब क्यों कराहने लगता है?

जिस बुराई को हम अपने लिए क्षम्य समझते हैं, या स्वाभाविक मानते हैं, या जिसकी हम अपने जीवन में उपेक्षा कर जाते हैं, उसके लिए दूसरे को कोसना असहिष्णुता है।

× × ×

असहिष्णुता की जड़ में अन्याय और द्वेष की प्रवृत्ति होती है। अन्याय और द्वेष को अपने अन्दर दबाये रखकर ऐ देश-सेवक, तू किस तरह लोकप्रिय और सफल बनने की अभिलाषा रखता है।

× × ×

दूसरे को सुधारने की, दूसरे को ठीक करने की इच्छा रखने वाले ऐ मित्र, तू अपनी ओर नज़र डाल। अपने घर में अभी तेरे लिए बहुत काम है।

× × ×

अँधेरे में काम करनेवाले ऐ मित्र, तुझे चोर कहते हुए मेरी आत्मा को बड़ा क्लेश होता है। एक खुले विरोधी के रूप में तेरी बहादुरी की पूजा करते हुए मैं अपने को गौरवान्वित समझूँगा।

× × ×

मैं बहादुरी का शैदा हूँ—इसमें मैं शत्रु-मित्र का भेद नहीं करना चाहता।

× × ×

अँधेरे में काम करके तू बुद्धिमान् कहा जा सके; पर बहादुर नहीं।

जब मन शंका करने लगता है तो ओफ़ ! कैसी कैसी बातें वह सोचने लगता है, परन्तु जब विवेक जाग्रत होता है तो मालूम होता है कि मन पागल हो रहा था।

× × ×

तुम किताबों को नहीं, मनुष्यों को पढ़ो। दूसरों के साथ-साथ अपने को भी पढ़ो।

× × ×

जब तुम अपने को पढ़ने लगोगे तो देखोगे कि कैसी-कैसी विस्मयजनक बातें सामने आती हैं। यदि तुम अपने मन के हर-एक भाव पर ध्यान रक्खोगे, उसको जाँचते रहोगे, तो तुम्हें अपने सुख-दुःख, हर्ष-शोक, सफलता विफलता, मैत्री-वैर का कारण ढूँढने के लिए दूर न जाना होगा, न अलहदा प्रयत्न करना होगा।

× × ×

यदि तूने दुर्भाव से कोई काम किया है तो फिर उसका बाहरी रूप कितना ही निर्दोष हो, उसका दुष्परिणाम तुझे और जगत् को अवश्य भोगना पड़ेगा।

× × ×

जब तू अपने अन्दर गोता लगाकर जगत् की सेवा करेगा तो देखेगा कि तेरी सेवा अधिक निर्लेप है।

× × ×

प्रसिद्धि सज्जनता की कोई जरूरी शर्त नहीं है। प्रसिद्धि तो कार्य और जीवन के स्वरूप पर अवलंबित है।

सज्जनता प्रसिद्धि के विषय में उदासीन रहती है। यदि तुझे सज्जनता प्रिय है तो दूसरों की प्रसिद्धि पर मोहित या दुखी न हो।

× × ×

यदि तुझे प्रसिद्धि की ही चाह है तो फिर तुझे सज्जनता की शर्तों को तोड़ने के लिए तैयार रहना चाहिए परन्तु यदि तू दूरदर्शी है, चतुर व्यापारी है, तो तुरन्त देख लेगा कि यह प्रसिद्धि, यदि मिली भी, तो बहुत मँहगी पड़ेगी।

× × ×

तू मेरी ईर्ष्या क्यों करता है? तू मुझ से क्या चाहता है? कोई कीमती भौतिक वस्तु तो मेरे पास है नहीं? और यदि कुछ हो तो उसमें मैं लिप्त नहीं हूँ।

क्या अब भी तुझे संतोष नहीं है?

× × ×

तू मुझसे क्यों शंकित रहता है? मैं तो शत्रु से भी प्रेम करने का अभ्यास करना चाहता हूँ। तू शंकाशील रहकर अपनी आत्मा का विनाश क्यों कर रहा है?

× × ×

यदि मेरा मित्र या रिश्तेदार मेरी बुराई करता है तो मुझे दुःख क्यों होना चाहिए? यदि वह बुराई मिथ्या है तो मुझे उस मित्र या रिश्तेदार के लिए ईश्वर से प्रार्थना करना चाहिए। यदि वह सच्ची है तो अपने लिए।

परन्तु मुझे दुःख इसलिए होता है कि मुझे यह डर हो जाता है कि दुनिया की दृष्टि में मैं गिर जाऊँगा। यदि तू सत्य का प्रेमी है तो यह क्यों नहीं मानता कि इससे मेरा और जगत् का लाभ होगा ?

× × ×

मेरा लाभ तो यह कि मैं आत्म-निरीक्षण में प्रवृत्त होता रहूँगा और जगत् का लाभ यह कि वह मेरी बुराई से बचने के लिए सावधान रहने लगेगा।

× × ×

इस कारण ऐसी निन्दा करनेवाले पुरुष को दोनों ओर से धन्यवाद मिलने चाहिए; किन्तु जगत् की उल्टी रीति देखिए कि उसे 'निन्दक' कहकर दुरदुराते हैं!

× × ×

एक समय था जब मैं खिल रहा था, मेरी महक फैल रही थी। तू सुगन्ध लेने आता था। अब मैं मुरझाने लगा हूँ। तुझे मुझसे विराग होना स्वाभाविक है।

× × ×

यदि तेरी आत्मा निर्भय है तो तुझे तलवार बाँधने की क्या ज़रूरत है ? और यदि तू ने मृत्यु के भय को जीत लिया तो फिर संसार में कोई भय तुझे परास्त नहीं कर सकता।

और जब मृत्यु एक दिन निश्चित ही है तो फिर उसका डर ही क्यों रक्खा जाय ? विश्वास रख कि मृत्यु के समय होने वाली पीड़ा तुझे संसार में मिलनेवाले कष्टों के पासंग में भी नहीं है।

× × ×

यदि तूने स्वार्थ को अपने हृदय में से निकाल डाला है तो फिर तुझे संसार में किसी से डरना और दबना न पड़ेगा।

× × ×

यदि तेरा मन भीतर से भयभीत रहा और ऊपर से तूने शस्त्रास्त्र बाँध रक्खे तो वे तेरी कितनी सहायता कर सकेंगे ?

× × ×

जो बात तू व्यक्तिगत जीवन में बुरी समझता है, उसे तू सामाजिक और राष्ट्रीय जीवन में कैसे आप, समझ सकता है ?

× × ×

कुछ लोग कहते हैं कि हम अपने व्यक्तिगत लाभ के लिए तो झूठ बोलना या किसी की हत्या करना पसंद न करेंगे; परन्तु राष्ट्रीय हित के लिए ऐसा करना पड़े तो हम उसे अनुचित नहीं समझते। मैं पूछता हूँ आप इन्हें व्यक्तिगत जीवन में बुरा क्यों समझते हैं ?

× × ×

इसीलिए न कि इनसे हमारा पतन होगा। तो फिर सामाजिक और राष्ट्रीय हित में इनका अवलम्बन करते हुए क्या आपका पतन न होगा ?

असली बात यह है कि आपने व्यक्तिगत और राष्ट्रीय जीवन में भेद मान रखा है। राष्ट्रीय या सामाजिक जीवन का अर्थ क्या है? व्यक्तिगत जीवन का विकास ही न?

× × ×

जब तक मेरा स्वार्थ मेरे शरीर और मन तक सीमित है तब तक मेरा जीवन व्यक्तिगत है, पर जब मेरा स्वार्थ मेरे शरीर और मन की सीमा को पार करके समाज या राष्ट्र में फैल जाता है तब वह राष्ट्रीय जीवन कहलाता है। अर्थात् वह मेरा व्यापक व्यक्तिगत स्वार्थ है। तो फिर उसके लिए मैं झूठ और हिंसा का आश्रय कैसे ले सकता हूँ?

× × ×

यदि लेता हूँ तो इसके साफ मानी यह हैं कि मैंने राष्ट्रीय हित को उतनी पवित्र वस्तु नहीं समझा है, राष्ट्रीय जीवन को शुद्ध रखने की मुझे उतनी चिन्ता नहीं है जितनी व्यक्तिगत जीवन को शुद्ध रखने की है।

× × ×

यदि इन दोनों जीवनों का भेद मिटा सके तो तुरन्त देख लेगा कि क्या व्यक्तिगत और क्या राष्ट्रीय दोनों जीवन के नियमों में अन्तर हो ही नहीं सकता।

× × ×

हाँ, दोनों जीवनों की प्रगति की गति में अन्तर हो सकता है। व्यक्तिगत जीवन की गति तीव्र और सामाजिक या राष्ट्रीय जीवन की मन्द हो सकती है।

वीरता क्या है ? निर्भय और बेधड़क होकर अपने को बड़े से बड़े कष्ट और खतरे का सामना करने के लिए तैयार रखना।

× × ×

आजकल पुस्तक लिखना और पढ़ना व्यापार ही नहीं, व्यसन हो गया है। मेरी राय में तो केवल दो ही उद्देश्यों से लिखना-पढ़ना आवश्यक है। एक तो मनुष्यता को समझने और उसका विकास करने के लिए; दूसरा जीविकोपार्जन के लिए।

× × ×

बिना किसी उद्देश के संसार में कोई भी काम करना निरर्थक है। पढ़ना और लिखना भी किसी उद्देश को लेकर होना चाहिए।

× × ×

क्या तू नवयुवक है ? तो फिर तेरा मुख मलीन क्यों है ?

× × ×

किसी के बारे में किसी की रिपोर्ट पर तबतक निश्चित राय न बनाओ, जबतक सम्बन्धित व्यक्ति से स्वयं पूछताछ न कर लो।

× × ×

रिपोर्ट निर्दोष भाव से की जाने पर भी वह भ्रमपूर्ण, गलत और गुमराह करनेवाली हो सकती है; क्योंकि सभी मनुष्य सत्य और अहिंसा का पूर्णरूप से पालन नहीं करते हैं।

× × ×

लोग 'साम्यवाद' से न जाने क्यों इतना घबराते हैं ? यदि उसमें से हिंसा और द्वेष निकाल दिया जाय तो वह एक अच्छी

समाज-व्यवस्था हो सकती है। और अबतक यदि थोड़े लोगों को सुख और बहुतेरे लोगों को दु:ख मिला है तो अब कुछ समय तक बहुतेरे लोगों को सुख और थोड़े लोगों को दु:ख मिलने की सम्भावना हो तो इस पर नाराज़ क्यों होते हो ?

× × ×

तुम मुझे खरीदने का यत्न क्यों करते हो ? मुझे खरीदोगे तो किसी दिन दिवाला निकालना पड़ेगा।

× × ×

मुझसे प्रेम करोगे तो बिना टके-कौड़ी और मिहनत के मुझे अपना गुलाम बना लोगे।

× × ×

स्वराज्य की कल्पना से आनंदित होने वालो, स्वराज्य-प्राप्ति के बाद विश्राम करने और निश्चिन्त होने की कल्पना करने वालो, तुम्हारी सच्ची परीक्षा का समय तो स्वराज्य मिलने के बाद ही है।

× × ×

आज तो शत्रु से लड़ने में खूब संगठन कर रहे हो, तुम्हारी एकता, एकनिष्ठा, लगन, धीरज की जाँच तो आगे होने वाली है जब आज से भी अधिक आन्तरिक कठिनाइयाँ पद-पद पर तुम्हें परेशान करेंगी।

× × ×

कुछ लोग कहते हैं—हमें तो स्वराज्य से मतलब है—हम हिंसा-अहिंसा के फेर में नहीं पड़ते। ऐसे मित्रों ने न तो देश की

वर्तमान स्थिति को ही, न स्वराज्य के स्वरूप को ही संजीदगी से समझने की चेष्टा की है और न यही विचारा है कि हमारी शक्ति का अच्छे से अच्छा उपयोग किस प्रकार हो सकता है ?

× × ×

इस टूटी-फूटी नाव के साथ तुम अपनी डोंगी क्यों जोड़ते हो ? इसका मल्लाह भी थका-माँदा है। हाँ, डूबने की तैयारी करली हो तो फिर हर्ज नहीं।

× × ×

ज्यों-ज्यों तू विवेक और ज्ञान की ओर बढ़ता जायगा त्यों-त्यों तेरे आवेश और व्याकुलता का स्थान स्थिरता, धीरज, और शान्ति को मिलता जायगा। तेरा काम थोड़ा होगा; पर फल बहुत निकलेगा।

× × ×

जब तक तुझमें आवेश और चंचलता है तब तक तू काम बहुत करेगा; परन्तु फल थोड़ा निकलेगा। तेरी बहुतेरी शक्ति व्यर्थ चली जाया करेगी।

× × ×

तू अपनी शक्ति को बहुत सोच-समझकर खर्च कर। कोई लखपति यदि अपने धन को अण्ट शण्ट खर्च करने लगे तो उसे तू समझदार कहेगा ? इस तरह बिना प्रयोजन बोलने, चलने, खाने-पीने आदि में तू अपनी शक्ति खर्च करके दिवालिया बनने की तैयारी क्यों कर रहा है ?

जब दिल बिक चुका है तो फिर बहुतेरी बातों की क्या ज़रूरत ?

× × ×

जब मैं अपने बालबच्चों की चिन्ता का भार ईश्वर पर छोड़ देता हूँ तो मैं उनके प्रति उपेक्षा नहीं प्रकट करता हूँ, बल्कि अपने से हजारों गुनी समर्थ, शक्ति के आश्रय में उन्हें रख देता हूँ।

× × ×

जब तक मैं अपने कुटुम्बियों का भार-बोझ अपने पर समझता था तब तक बड़ा चिन्तित रहता था। अपने बीमार होने के समय सब से पहले यही चिन्ता होती थी कि मैं यदि मर गया तो कुटुम्बियों का क्या होगा? पर जिस दिन मुझे यह अन्तः प्रेरणा हुई कि कुटुम्ब का ईश्वर मैं नहीं, कोई दूसरा है, और उसी पर सारे जगत् का भार है, उस दिन से मैं मस्त रहता हूँ और बीमार भी कम होता हूँ। कुटुम्ब की गाड़ी भी उसी तरह चल रही है।

× × ×

जब मैं यह कहता हूँ कि अपने अपने कर्म का फल सबको भोगना ही पड़ता है तब उसके मानी यह नहीं है कि हम किसी के दुःख में सहायक न हों—बल्कि यह कि उस सहायता की मर्यादा है और उसे हमें सदा याद रखना चाहिए।

× × ×

यह मर्यादा हमें व्यर्थ की चिंताओं से और दूसरे को व्यर्थ की आशाओं से बचावेगी। फलतः दोनों का दुःख कम होगा।

मुक्ति तो बड़ी चीज़ है; सम्भव है, बहुतेरे लोगों की समझ में भी वह एकाएक न आवे, परन्तु संसार में सफलता के लिए यह आवश्यक है कि हम सुख-दुःख, हर्ष-शोक, हानि-लाभ, राग द्वेष से ऊपर उठ जायँ

× × ×

आनंद और शान्ति दो भिन्न वस्तुयें हैं। आनन्द उन्माद का और शान्ति ज्ञान का परिणाम है। आनन्द में उछलते हुए झरने का जीवन होता है; शान्ति में समुद्र की स्थिरता और गंभीरता।

× × ×

आनन्द उछलता, कूदता आता है; शान्ति मुस्कराती हुई चलती है। आनन्द के पाँव में जब चोट लग जाती है तो शान्ति उस पर सान्त्वना की पट्टी बाँधती है।

× × ×

दूसरे के दुःख से दुखी होना आत्मिक विकास का आरम्भ है; किन्तु अपने को दुखी न होने देते हुए दुःख का इलाज दिलजान से करना ज्ञान की परिणति है।

× × ×

एक टिटहरी का बच्चा मर गया। वह दिन भर 'टीं टीं' करती रही। उसी जगह बतखों के ६ बच्चे मर गये। बच्चों को अधमरा देखकर ही उन्होंने उनसे मोह छोड़ दिया। एक मित्र ने सरल व्यंग्य में कहा—'बतखें मनुष्यों के अधिक नज़दीक पहुँच गई हैं।'

एक दूसरे मित्र कौवों से बहुत प्रीति करने लग गये थे—कहते थे—मनुष्यों से कौवे अधिक ईमानदार होते हैं।

× × ×

ठीक है, मनुष्य को अपना, अपनी जाति का दोष ही देखना चाहिए!

× × ×

जो मनुष्य जितना ही अन्तर्मुख होगा, और जितनी ही उसकी वृत्ति सात्विक और निर्मल होगी उतनी ही दूर की वह सोच सकेगा और उतने ही दूर के परिणाम वह देख सकेगा।

× × ×

मैं स्वराज्य के लिए थोड़ा भी काम करता हूँ तो स्वराज्य एक-एक क़दम आता हुआ मुझे अवश्य दिखाई देना चाहिए।

× × ×

स्वराज्य कब आवेगा, यह दूसरे से नहीं, अपने से पूछो।

× × ×

कुछ मित्र कहते हैं कि फलाँ जेल जायँगे तो हम जेल जायँगे—पहले फलाँ चला जाय तो बाद को हम जायँगे। मैं कहता हूँ—स्वराज्य तो दो-चार आदमियों के जेल जाने या न जाने से रुकने वाला है नहीं, हाँ हम अलबत्ता इस घर आई गंगा में पवित्र होने का अवसर हाथ से खो रहे हैं। हम अपनी ही हानि कर रहे हैं।

हमें इस बात की कम फिक्र रहती है कि हम अच्छे बनें—इस बात की अधिक कि लोगों में अच्छे दिखाई दें। फिर भी लोग पूछते हैं कि साहब, पहले तो लोग ''' 'को बहुत मानते थे, अब क्यों नहीं मानते ?

× × ×

यदि तुम किसी के नज़दीक जाना चाहते हो तो उसके गुणों की क़द्र करो। आलोचक बनकर जाओगे तो और कहीं पहुँचोगे, उसके नज़दीक नहीं।

× × ×

विश्लेषण करना एक बात है, आलोचना करना दूसरी बात है। विश्लेषण गुण दोष को अलग-अलग करके देखता है—आलोचक का दोष-दर्शन में अनुराग होता है।

× × ×

यदि मैं तेरी टीका या निन्दा नहीं करता हूँ तो यह समझने की भूल न कर कि मैं अन्धा हूँ। यदि मैं बिना जिरह किये तेरी बात पर विश्वास कर लेता हूँ तो यह न समझ कि तेरी सभी बातें विश्वास करने योग्य होती हैं।

× × ×

यदि तू चाल चल जाता है और मैं तुझसे इसकी शिकायत नहीं करता, तो यह न समझ कि मैं बेवक़ूफ़ हूँ।

× × ×

ऐ खुशामद चाहने वाले, यदि मैं तेरी खुशामद नहीं करता हूँ तो यह न समझ कि मैं तुझसे प्रेम नहीं करता हूँ।

तू अपना प्रदर्शन नहीं करता है किन्तु दूसरे प्रदर्शन करने वालों की शिकायत बनी रहती है, तो विचार कर कि तेरे संयम से तुझे शान्ति क्यों नहीं मिल रही है ?

× × ×

तू अकारण ही कटु और अपशब्दों का प्रयोग करके अपना मूल्य और प्रभाव क्यों कम करता है ? यह तेरी निर्भीकता हो सकती है, परन्तु विवेक और समझदारी नहीं।

× × ×

जब मैं स्नेह से देखता हूँ तो मुझे सब लोग आत्मीय से लगते हैं; किन्तु ज्ञान से देखने की चेष्टा करता हूँ तो सब मुसाफिर-से मालूम होते हैं।

× × ×

जब मेरे मन में कुछ द्वेष था तो तू घिनौना मालूम होता था—अब तेरे लिए ईश्वर से प्रार्थना करता रहता हूँ।

× × ×

संघ और दल दो चीज़ें हैं। संघ में सेवा और धर्म-प्रचार का भाव अधिक है और दल में राजनैतिक संगठन और संग्राम का।

× × ×

संघ सेवा और प्रचार करते हैं, दल लड़ते हैं।

× × ×

'दलबन्दी' में दूसरे दल वालों के खिलाफ संगठन करने का भाव है। संघ और दल बनाना बुरा नहीं, पर 'दलबन्दी' बुरी है।

'दलबन्दी' से समाज और देश का हित एक ओर रह कर 'दल' ही मुख्य होने लगता है। इससे आपस में ईर्ष्या, द्वेष, मत्सर, द्रोह, कलह के घृणास्पद भाव फैलते हैं।

× × ×

संसार में हम किसे अपना शत्रु मानें? हम खुद जितना नुकसान अपने को पहुँचाते हैं उतना दूसरा हरगिज नहीं पहुँचाता।

× × ×

तो फिर हमसे बढ़कर हमारा शत्रु कौन हो सकता है? यदि हम इस सत्य को समझ लें तो सफलता हमारे आस-पास नाचने लगे और चारों ओर हमें मित्र ही मित्र दिखाई देने लगें।

× × ×

मैं बड़ा हूँ या साधन? जब तक मुझे साधनों के पास जाना पड़ता है तब तक साधन बड़े हैं—जब वे मेरे पास दौड़ते हुए आने लगते हैं तब मैं बड़ा हूँ।

× × ×

जिसने साधन निर्माण किये उसीका अंश यदि मैं हूँ तो साधन मुझसे बड़े कैसे हो सकते हैं?

× × ×

यदि साधन ही बड़े हैं तो लोग राम, कृष्ण, बुद्ध, महावीर, मुहम्मद, ईसा-मसीह, गाँधी को क्यों मानते हैं, साधनों की पूजा क्यों नहीं करते?

तू स्वयं अपनी परिस्थिति का रचयिता है। जिस परिस्थिति में तूने जन्म पाया है वह भी तेरी ही कृतियों से प्राप्त हुई है।

× × ×

यदि तू अपने से अधिक महत्व परिस्थिति और साधनों को देता रहेगा तो तेरी आत्मा निर्बल होती चली जायगी—तुझे सदा दूसरों की शिकायत रहेगी और तू अपनी त्रुटियों को न देख सकेगा, न सुधार सकेगा।

× × ×

दूसरों की शिकायत करने के बनिस्बत अपनी शिकायत करने में अधिक बल और बहादुरी की जरूरत होती है।

× × ×

बुद्धि का फल यह न होना चाहिए कि हम दूसरों के दोष देखते रहें, उन्हें जतन से संभाल कर रखते रहें, बल्कि यह होना चाहिए कि गुण अधिक देखे जाएँ और उन्हें संग्रह किया जाय।

× × ×

बुद्धि यह भी चाहती है कि हम इस बात को समझें कि दूसरों के दोष देखने से हमारा और जगत् का इतना लाभ नहीं है जितना कि उसके गुण देखने में है।

× × ×

इसका यह अर्थ नहीं कि हम अवलोकन करना ही बन्द कर दें। बल्कि यह कि भूसी में से गेहूँ रख लें और भूसी फेंक दें।

किसी का दोष देखकर उसका रस लेना एक बात है और उस पर दया आना दूसरी बात है।

× × ×

जब तक हमारा दिल रस लेता रहता है तब तक हमारे लिए आत्मशोधन की बहुत आवश्यकता है। निश्चित रूप से वही चोर हमारे घर में घुसा हुआ है जिसने दूसरे के घर को खोखला बना दिया है।

× × ×

पक्षपात तुझे अपने मित्रों का स्नेह-पात्र कुछ समय के लिए बना सकता है परन्तु नये मित्रों के आने का रास्ता रोक देता है।

× × ×

यदि तू अपने अपराधों और पापों पर पश्चात्ताप कर लेगा तो फिर तुझे वे एक बीते हुए सपने की तरह नज़र आते रहेंगे और तू सदा के लिए उनके आतंक से बच जायगा।

× × ×

पश्चात्ताप तो वह है जब हमारा दिल कहता है और दुखी होता है कि अरे यह कैसा जघन्य कार्य हो गया! परन्तु प्रायश्चित्त उसे कहते हैं जब हम अपने को कोई ऐसी सज़ा देते हैं जिससे आगे बुरा करने की प्रवृत्ति न हो।

× × ×

जो सज़ा अपने आप दी जाती है वह प्रायश्चित्त है और जो दूसरों के द्वारा दी जाती है वह दण्ड है। प्रायश्चित्त से मन वैसा

ही हरा ताज़ा हो जाता है जैसा कि स्नान करने से शरीर हो जाता है, किन्तु दण्ड से पश्चात्ताप कम होता है, पतन अधिक।

× × ×

यदि तू सचमुच न्यायी रहना चाहता है तो जिससे तेरी अनबन है उसके विषय में अधिक उदार रहने की चेष्टा कर।

× × ×

तू किसी को उपदेश न दे, जबतक कि तेरे शुद्ध भाव पर उसे विश्वास न हो और वह तुझे उपदेश देने के योग्य न समझता हो।

× × ×

चमक ही बढ़े पन की निशानी नहीं है। झूठे मोती सच्चे मोती से ज़्यादा चमकते हैं।

× × ×

यदि किसी ने तेरी बात पर ध्यान नहीं दिया तो उसे गाली मत दे, तू उसका कारण खोज; तुझे उसमें अपनी ही कोई खामी नज़र आवेगी।

× × ×

तू गुरु बनने की जल्दी मत कर। अभी तो सच्चे विद्यार्थी की बातों को भी तू पूरा नहीं कर रहा है।

× × ×

तू चाहे साम्यवादी बन, चाहे हिंसावादी बन, पर कपटनीति का आश्रय मत ले। याद रख, यह तेरी आत्मा (Morale) को

कुतर-कुतर कर खा जायगी और तेरा यह महल किसी दिन धड़ाम से गिर जायगा।

× × ×

हिंसा में फिर भी कुछ बहादुरी है। और यदि बहादुरी नहीं तो साहस अवश्य है। किन्तु छल-कपट में तो कायरता और नीचता दोनों है।

× × ×

जगत् उसी को जानता और मानता है जो जगत् के लिए महान् हुआ हो।

× × ×

जो अपने लिए महान् बने हों, उन्हें यदि जगत् ने जाना और माना न हो तो इसलिए जगत् की शिकायत क्यों की जाय?

× × ×

यदि तू पतित है तो जगत् के सामने यों रोता और गिड़गिड़ाता क्यों है? जगत् रोने वाले को और रुलाता है।

× × ×

यदि मैं तुझे उठाने का प्रयत्न करता हूँ तो इससे मैं अपना ही अधिक हित करूँगा। तू तो अपने ही प्रयत्न से उठ सकेगा।

× × ×

तू निराश मत हो, धीरज मत छोड़। हर एक पुण्यात्मा ने कभी न कभी कोई पाप ज़रूर किया है और अबतक बड़े से बड़े पापियों का भी उद्धार हो चुका है।

किसी संस्था में हम सेवा और सहयोग के लिए आते हैं न कि सत्ता पाने और भेद पढ़ाने के लिए। यदि हम योग्य हैं तो सत्ता और बड़प्पन हमारे पास अपने आप आ जायगा।

× × ×

मुझे अपने गुणों पर पढ़ना चाहिए, न कि दूसरों की कृपा पर। मेरे गुण मुझे बढ़ायगे, उसकी कृपा उसे बढ़ावेगी।

× × ×

दूर रह कर, मेरे गुणों की चर्चा सुनकर मेरे भक्त बननेवाले की अपेक्षा नज़दीक आकर, मेरे दुर्गुणों को देखकर, मेरा निन्दक बनजाना मैं पसन्द करूँगा।

× × ×

वह भक्त मुझे डुबावेगा, यह निन्दक मेरा उद्धार करेगा।

× × ×

महात्मा गाँधी ने यह बहुत ठीक कहा है कि जबतक मेरी निन्दा और टीका होती रहती है तबतक मैं बेखटके सोता हूँ, जब प्रशंसा के पुल बँधने लगते हैं तब मुझे चिन्ता के साथ जागना पड़ता है।

× × ×

आत्म विश्वास की कमी हमारी किसी और कमी की निदर्शक है। यदि सचाई पर हमारा पूरा भरोसा है तो हमारा आत्मविश्वास बढ़ना ही चाहिए।

यदि कोई बात तेरी समझ में न आती हो तो यह मत कह दे कि ऐसा हो ही नहीं सकता। इससे न केवल अपनी बुद्धि की कमी सूचित होती है; बल्कि दूसरे की बुद्धि का अनादर भी होता है।

× × ×

अनासक्ति की कसौटी यह है कि फिर उस वस्तु के अभाव में हम कष्ट का अनुभव न करें।

× × ×

यदि हम कर्म के सिद्धान्त को मानते हैं और सचमुच उसपर दृढ़ रहते हैं तो अनासक्ति अपने आप आजाती है।

× × ×

अनासक्ति का अर्थ प्रेम की कमी हरगिज़ नहीं है। जहाँ प्रेम का फल दुःख होता हुआ दिखाई दे वहाँ समझो कि आसक्ति है।

× × ×

जो वेतन मैं अभी पा रहा हूँ उससे यदि मेरी योग्यता अधिक है तो मुझे अपनी जीविका की चिन्ता नहीं हो सकती।

× × ×

दूसरे मेरे लिए जो शुभ या अशुभ भावना रखते हैं उसका परिणाम मेरे जीवन और कार्यक्रम की सफलता पर अवश्य होता है।

× × ×

मेरे लिए अशुभ भावना वही रक्खेंगे जिन्हें या तो मेरे द्वारा दुःख या हानि पहुँची है, अथवा मेरे कार्यों से पहुँचने की संभावना है।

परन्तु यदि मैं सत्य और अहिंसा को अपना अटल पथदर्शक मानता रहूँगा तो मेरे द्वारा दूसरों को कष्ट पहुँचने की संभावना कम होती जायगी।

× × ×

मेरी अहिंसा उन्हें मेरी तरफ से कष्ट न पहुँचने देगी और मेरा सत्य उन्हें इस बात के लिए प्रेरित करता रहेगा कि वे अपने कष्ट और हानि को ज़िम्मेवार मुझे न समझें।

× × ×

मेरा काम है सेवा के लिए तैयार रहना। उसे स्वीकार करना न करना तेरी मर्ज़ी की बात है।

× × ×

यदि तू मुझे क्षुद्र समझकर मेरी सेवा स्वीकार नहीं करता है तो तू अपने निरभिमान होने के अवसर को खोता है। यदि मुझे बड़ा समझकर स्वीकार नहीं करता है तो तू सहिष्णु बनने के अवसर को गँवाता है।

× × ×

ज़ालिमो, दमन करके तुम अपनी क्रूरता को सन्तुष्ट कर सकते हो; तुम्हारी मनुष्यता तो तुम्हें अपने पतन के लिए कोसती ही रहेगी।

× × ×

कौशल एक योग है—जो सत्य और अहिंसा के संयोग से पैदा होता है।

धोखाधड़ी का नाम 'कौशल' नहीं है। धोखाधड़ी शैतान की चाल है और कौशल सत्पुरुष का साधन है।

× × ×

कुछ सुधारकों के मन में वेश्याओं के विवाह का बहुत उत्साह है। विधवायें तो अब देश में रही ही नहीं कि जिनका विवाह कराया जावे! हमारी भी सलाह है कि स्वराज्य का काम भी छोड़कर सब को इसी आवश्यक सुधार में लग जाना चाहिए। इससे स्वराज्य के काम में धन-जन दोनों की मदद भी मिलेगी!!

× × ×

"अरे भाई, जरा संभाल कर बोला करो!"

"जानता नहीं, मैं नवयुवक हूँ!!"

× × ×

"भाई जरा बड़े बूढ़ों की सेवाओं का लिहाज़ रक्खा करो।"

"आप बड़े बूढ़ों को ही क्यों नहीं कहते कि वे नौजवानों से न उलझा करें। हम तो नवयुवक ही ठहरे!"

× × ×

"रोज़-रोज़ स्वाद की उपेक्षा करने से क्या लाभ? हमें सदा जैसा मिल जाय वैसा ही आनन्द से खा लेने के लिए अपना मन तैयार रखना चाहिए।"

× × ×

"अरे, आज दलिया में घी नहीं छोड़ा। और ये रोटियाँ भी रूखी हीं।"

"जी, आज घी नहीं आया।"

बाबूजी का चेहरा लम्बा हो गया; आँखें नीरस दीखने लगीं। खाना आधा भी नहीं खाया गया।

× × ×

"आप का काम सन्तोषजनक क्यों नहीं हो रहा है?"

"आपने मुझे पूरी ज़िम्मेवारी तो दी ही नहीं।"

× × ×

"योग्यता का परिचय मिलने के बाद ज़िम्मेवारी दी जाती है? या ज़िम्मेवारी देने के बाद योग्यता की जाँच की जाती है? कोई कभी यह कहेगा कि पहले मुझे प्रोफेसर बना दो, फिर देख लेना मैं कैसा पढ़ाता हूँ?"

× × ×

ज़ोरदार पौधा अपने आप आसपास की जमीन में से रस खींच लेता है। कमज़ोर की जड़ पानी पिलाते रहने पर भी सड़ जाती है।

× × ×

आनन्द में एक प्रकार का मीठा नशा होता है। उसके निकल जाने पर वह शान्ति हो जाता।

× × ×

आनन्द दुःख को पास नहीं आने देना चाहता; शान्ति दुःख को हज़म कर जाती है।

जिन व्यक्तियों के द्वारा तुम्हें बार-बार कष्ट पहुँचता हो तो समझो कि उन्हें ईश्वर ने तुम्हारे सुधार के लिए तुम्हारे पास भेजा है।

× × ×

मुझे दूसरे से कष्ट उसी अवस्था में पहुँच सकता है जब मेरे अन्दर कुछ खामियाँ, कुछ बुराइयाँ हों।

× × ×

जब हम सारे प्रवृत्तियों में—भिन्न-भिन्न जीवन-कार्यों में—लगे रहते हैं तब हम देने की तरफ अधिक ध्यान रखते हैं, कमाने की तरफ कम।

× × ×

कमाई करना हो तो अपने आप में डूबो। अपनी एक-एक कमजोरी पर निगाह रक्खो। नहीं तो किसी दिन बुरी तरह दिवाला निकल जायगा।

× × ×

हमें देने की फ़िक्र इतनी क्यों पड़ी रहती है? यह जल्दी ही हमें पाखण्ड में प्रवृत्त करती है। आडम्बर इसीके कारण हमारे घर आता है।

× × ×

पता नहीं पिछले ज़माने के लोगों ने स्त्रियों पर इतना आक्रमण क्यों किया है? तो फिर क्या यह ग़लत है कि स्त्रियों पर वार करना कोई शूर-वीरता नहीं है?

भय ही निन्दा कराता है। निन्दक के बराबर कायर नहीं। सच-मुच स्त्रियों की मनमानी निन्दा करके क्या उन लोगों ने अपने को कायरों में नहीं खपाया है?

× × ×

सूरमा लड़ता और जीतता है, गाली नहीं दिया करता। गाली देने वाला अपना बल पहले ही खो चुका होता है।

× × ×

शर्म हारने में नहीं, गाली देने में है। हारता वही है जो लड़ता है। गाली देने वाले और लड़ने वाले एक ही नहीं हुआ करते।

× × ×

शर्म हारने में नहीं, भागने में है। स्त्रियों को जीतो, उनसे डर कर भागो मत। उन्हें गाली देना तो मातृ-जाति का निरादर करना है।

× × ×

स्त्रियों को जीतना अपने-आपको जीतना है। जिसने अपने-आप को जीत लिया उसने सारा जग जीत लिया।

× × ×

तुझको भगवान् ने बहुत-कुछ दिया है; मैं दीन-हीन हूँ। क्या इसीलिए मेरे मनुष्यत्व को तेरे सामने गिड़गिड़ाना चाहिए?

× × ×

यदि तुझे तेरे वैभव का अभिमान है तो मेरी 'न-कुछता' मेरे लिए कम मूल्यवान् नहीं है।

वास्तव में वही सम्पत्तिवान् है जिसने अपने को 'न-कुछ' समझ लिया है। शेष तो सम्पत्ति के चौकीदार-मात्र हैं।

× × ×

तुम सम्पत्ति और पोज़ीशन के फेर में क्यों पड़ते हो? बिना चोरी किये और लूटे दो में से एक भी चीज तुम्हारे हाथ नहीं लग सकती।

× × ×

तुम अपनी आत्मा को उजालो—जिसमें अटूट सम्पत्ति और ऐश्वर्य भरा हुआ है एवं जो मनुष्य की सर्वोच्च स्थिति है। असली गुलाब तुम्हारे पास है—कागज़ी फूलों के पीछे क्यों मर रहे हो?

× × ×

तू विद्वान् है? तो इतनी डींगें क्यों मारता है? क्या विद्वान् की यह जरूरी पहचान है?

× × ×

तू खुद उद्धत रहकर मुझे नम्र बनाना चाहता है? तो यों क्यों नहीं कहता कि मुझे नम्रता से प्रीति नहीं, मैं तो तुझे झुकाना चाहता हूँ।

× × ×

पर भाई, जो नम्र है उसे कोई कैसे झुका सकता है? झुकना तो उद्धत के ही लिए है। नम्रता मनुष्यता का विकास है; उद्धतता पशुता का अवशिष्ट है।

तुझे मुझसे प्रीति है, या मेरे वैभव से? यदि मुझसे है तो फिर मेरे वैभव की इतनी तारीफ़ क्यों?

× × ×

यदि मुझसे प्रीति है तो फिर मेरे लिए ईश्वर से प्रार्थना करने के बजाय अपने लिए मुझी से क्यों प्रार्थना करता है?

× × ×

क्या तेरी मित्रता के लिए यह जरूरी है कि मैं अपना सिद्धांत छोड़ूँ, अपनी अन्तरात्मा के विरुद्ध चलूँ? यदि हाँ, तो तू मुझे अपना मित्र नहीं, गुलाम बनाना चाहता है!

× × ×

तू अपने दुःख का कारण, पूर्व जन्म की अपेक्षा, इसी जन्म में खोज। तुझे आश्चर्य होगा कि जिस तरह का दुःख तू पा रहा है, उसी तरह का दुष्कर्म तेरे हाथों इसी जन्म में हुआ है।

× × ×

किसी भी दुःख या क्लेश का कारण ढूँढ़ने में सुस्ती और गफ़लत मत कर। कारण मिल जाने पर तुझे उतना ही आनन्द होगा जितना अन्धे को आँखें मिल जाने से होता है।

× × ×

यदि तू आज़ादी का मतवाला है तो फिर तूने अपनी सैनिकता की इतनी शर्तें क्यों लगा रक्खी हैं?

× × ×

घर में आग लगी हुई है—और तू इसलिए उसे बुझाने नहीं दौड़ पड़ता है कि भाइयों से तेरी बनती नहीं है!!

यज्ञ-कुण्ड धधक रहा है—आहुतियों पर आहुतियाँ गिरती जा रही हैं! और तू इसलिए रूठा बैठा है कि ऋत्विजों से तेरा मन नहीं मिलता है!!

× × ×

क्या मेरी खिल्ली तू इसीलिए उड़ाता है कि तेरा मेरा मत नहीं मिलता है? क्या मेरी खिल्ली उड़ाकर तू अपने मत की उपयोगिता सिद्ध कर रहा है?

× × ×

मैं तेरे मत को नहीं देखना चाहता, तेरे जीवन को, तेरे चरित्र को देखना चाहता हूँ।

× × ×

मैं त्याग करता हूँ, कष्ट उठाता हूँ, फिर भी मेरा जी भीतर से जलता क्या रहता है? देख तो कहीं प्रतिफल पाने की आशा तो नहीं झुलस रही है?

× × ×

कल वह तुझे कितना प्यारा लगता था—आज उसे आता देख तेरी आँखें उसे कोसने क्यों लगती हैं?—जो तेरा सहयोगी था—वह कहीं तेरा प्रतिद्वन्द्वी तो नहीं हो गया है?

× × ×

जब मेरे दु:ख का सवाल था तब तेरी आँख मुझे कितने स्नेह से देखती थीं—अब तेरे दुःख का प्रश्न है तब मुझे तेरी आँखों का स्नेह क्यों नहीं दिखाई देता?

उपन्यास पढ़कर तो प्रेम, आनन्द, समता की बातें बहुतेरे करने लग जाते हैं, परन्तु दुनिया की रगड़ में पड़ने के बाद जो उसी उत्साह से प्रेम, आनन्द और समता अपने जीवन में। दिखाता है वही सच्चा मर्द है।

× × ×

तुम मेरी उदासीनता से क्यों चिन्तित होते हो? क्या नारियल के अन्दर मीठा पानी नहीं होता है?

× × ×

मैंने एक पिता से शिकायत की कि आप बराबरी के पुत्र को दूसरों के सामने इस बुरी तरह से फटकारते हैं कि उस समय उसके चेहरे की तरफ मुझसे देखा नहीं जाता। उन्होंने उत्तर दिया— वात्सल्य इसी का नाम है। वह दिल के सिवा और किसी बाहरी बात का विचार नहीं करता।

× × ×

तू अपनी जगह इसलिए है कि तू उसी के योग्य है। ईश्वर के यहाँ अन्याय नहीं है। तू और अच्छी जगह चाहता हो तो और अच्छा बन।

× × ×

ईश्वर को या जगत् को कोसने से तेरी स्थिति नहीं सुधर जायगी। अपनी स्थिति के लिए तू अपने को ही दण्ड दे।

श्रम-साध्य वस्तु यदि सहज में मिलती हो तो उसे लेते हुए हिचक। बिना परिश्रम के फल मिलता हो तो उसे ईश्वर की कृपा नहीं शैतान की करतूत समझ।

× × ×

मेरे मौन से तू इतना क्यों डरता है? क्या तू एक ज़बान की ही बोली समझता है?

× × ×

तुम मेरे विरोधी हो या मेरे मत के?—"मत के"। तो फिर मेरे मत की निन्दा करो; मेरी निन्दा करके तुम अपने को सज़ा क्यों दे रहे हो?

× × ×

सुन्दरता रूप में है, गुण में है, या देखने वाले की आँखों में है? यदि रूप में है तो लैला में कौन-सा रूप था? यदि गुण में है तो वेश्याओं के इतने उपासक क्यों हैं? इतने तलाक़ क्यों दिये जाते हैं? यदि देखने वाले में है तो फिर बाह्य जगत् की क्या आवश्यकता है?

× × ×

सुन्दरता वहीं है जहाँ सत्य है। सुन्दरता वहीं है जहाँ शिव है। सत्य सदा कल्याणकारी होता है। मनुष्य को वही वस्तु सुन्दर मालूम होती है जिसमें उसका मन रम जाता हो—मन को आनन्द और शान्ति प्रतीत होती हो। आनन्द और शान्ति वास्तव में सत्य के ही परिणाम हैं; परन्तु स्थूल-बुद्धि मनुष्य इन्हें रूप आदि

बाह्य साधनों में देखने लगता है। इसीलिए वह विलासी बन जाता है। यदि वह उसकी तह तक पहुँच सके तो सच्चे सौन्दर्य का उपभोग भी करेगा और उसकी वासना से भी दूर रहेगा।

× × ×

संसार की प्रत्येक वस्तु को हमें इस कसौटी पर कसना ही पड़ेगा कि वह हितकर और उपयोगी है या नहीं? यदि ईश्वर को यह मंजूर न था तो उसने मनुष्य को बुद्धि-हीन ही क्यों न रहने दिया।

× × ×

सत्य ही मनुष्य का एकमात्र साध्य है—शेष सब साधन हैं। शास्त्र, कला, सौन्दर्य, सब सत्य की ओर ले जानेवाली सीढ़ियाँ हैं। यदि ये सत्य से विमुख होने लगें तो समझ लो कि ये व्यभिचारी हो गये हैं।

× × ×

केवल और स्वतंत्र आनन्द नामक कोई वस्तु जगत् में नहीं है। उसके नाम से हम सूक्ष्म विलास की ही पूजा और साधना करते हैं।

× × ×

आनन्द और मनोरंजन के नाम पर प्रचलित काव्य, कला, सौन्दर्य, चतुर विलासिनी रमणी की उपमा के योग्य हैं।

× × ×

जीवन की साधना और रमणीयता में कोई खास नाता नहीं है, रमणीयता साधना की नहीं, बल्कि साधना रमणीयता की कसौटी होनी चाहिए।

आनन्द नहीं, शान्ति के पीछे पड़ो। आनन्द तुम्हें बहा ले जायगा—शान्ति तुम्हें किनारे लगा देगी।

× × ×

आनन्द में रस और मद है; शान्ति में समाधान और सुख है। आनन्द इन्द्रियों को उत्तेजित करता है; शान्ति उनके आवेगों को अपने उदर में समा लेती है।

× × ×

आनन्द चञ्चल और शान्ति निश्चल है। आनन्द उफान है; शान्ति स्थिर सम्पत्ति है।

× × ×

श्रमजीवी से बुद्धि-जीवी क्यों बड़ा है? क्या इसीलिए कि वह उनके श्रम से अपना लाभ करना जानता है? तो क्या बड़ा उन्हें कहना चाहिए जो सीधे लोगों को बेवकूफ बनाकर अपना उल्लू सीधा करते रहते हैं?

× × ×

तो वे लोग महा मूर्ख हैं जो राम, कृष्ण, बुद्ध, महावीर, ईसा, मुहम्मद आदि को बड़ा मानते और पूजते हैं। इनके तो ऐसे किसी महत्कार्य का उल्लेख इतिहास या कथा-वार्ताओं में नहीं मिलता।

× × ×

धरती धर्म पर पर टिकी हुई है, धन पर नहीं। धन को धर्म से अधिक महत्व देनेवाले धरती को रसातल भेजने पर तुले हुए मालूम होते हैं।

अपकार करना और उपकार चाहना दो भिन्न वस्तुएँ हैं। उपकार करना मनुष्यत्व का उच्च गुण है, परन्तु उपकार चाहना मनुष्यता की पामरता है।

× × ×

जहाँ उपकार चाहने वालों की संख्या बढ़ जाती है वहाँ उपकार करनेवालों की संख्या कम हो जाती है।

× × ×

मुझे तेरे मन की चाह है, धन की रक्षा मैं कहाँ करता फिरूँगा? मन को तो अपने मन में हिफ़ाज़त से रख लूँगा।

× × ×

मेरी प्रशंसा से तेरी भलाई नहीं होगी। ऐसा काम कर जिससे मुझे तेरी प्रशंसा करनी पड़े।

× × ×

तू ख़ुशामद क्यों चाहता है? क्या मेरे गुण तेरे काम के लिए काफ़ी नहीं हैं? तू मुझ से काम चाहता है, या अपनी बड़ाई?

× × ×

मुझ बूढ़े को घर में से क्यों निकालते हो? क्या अपनी जवानी में मैंने ही इस घर को आबाद नहीं किया था?

× × ×

मुझे नसीहत क्यों देते हो? आपने भी तो अपनी जवानी में बाबा को घर से निकाल दिया था। मेरा नहीं यह जवानी का क़सूर है।

जवानी दीवानी होती है और बुढ़ापा कुढ़ापा। विचारों में बूढ़े और भावना में जवान रहो। जवानी और बुढ़ापे में इस तरह मेल साध लो, उन्हें लड़ाओ मत।

× × ×

जवानी, आ! तू मेरे हृदय की देवी है। बुढ़ापा, आ! तू मेरे सिर का मौर है, मेरी छत्रच्छाया है।

× × ×

'प्राणेश्वरी' और 'प्राणेश्वर' शब्दों में यदि सचमुच प्राण हो तो यह संसार स्वर्ग बन जाय। ओ शब्दों के जीव, प्राणों की पिपासा शब्दों से नहीं तृप्त होती।

× × ×

अपराध करना बुरा है, उसको स्वीकार करना नहीं। स्वीकार करना तो अपराध को धोना है।

× × ×

भोगेच्छा हमसे पाप करवाती है और मिथ्याभिमान उसे स्वीकार करने से रोकता है।

× × ×

असंयम आत्मा पर इन्द्रियों की विजय है; संयम इन्द्रियों पर आत्मा की मुहर है।

× × ×

मैं अपने विद्यार्थी जीवन में ही इस नतीजे पर पहुँच गया था कि मैंने प्राय. सब विकारों को जीत लिया है। अब बरसों से प्रयत्न

करते हुए भी जब अपनी असफलताओं की गिनती लगाता हूँ तो अपने उस भोलेपन पर तरस आता है !!

X X X

उद्धत और कायर में कौन भला है ? उद्धत। क्योंकि कायर दूसरे को अत्याचारी बनाता है और उद्धत दूसरे में बहादुरी लाता है—प्रतिकार-शक्ति उत्पन्न करता है। कायर उद्धत को आततायी बनाता है और उद्धत कायर को बहादुर।

X X X

क्रोध करके हम दूसरे को उसकी गलती नहीं समझाते हैं अपनी प्रभुता की स्वीकृति उससे कराना चाहते हैं।

X X X

"तुम ग़रीब ही रहना चाहते हो, या अमीर बनना चाहते हो ?"

"बाबा अमीर बनाकर क्या करोगे ? मुझे ग़रीब ही बना रहने दो। गरीब रहकर मैं परमात्मा को याद तो किया करूँगा—अपने दुखी भाई-बहनों के कुछ काम तो आया करूँगा।"

X X X

तू मुझे झुकाने में, जलील करने में, अपना गौरव क्यों समझता है ? एक का गौरव घटाने से ही क्या दूसरे का गौरव बढ़ता है ?

X X X

तेरे पास सत्ता है तो इतने ही से मूँछों पर ताव क्यों देता है ? फूलना ही हो तो अपनी भलमनसाहत पर फूल, सत्ता पर नहीं।

"लोग दामाद की इतनी खातिर क्यों करते हैं? जो किसी की बहन-बेटी को सतीत्व नष्ट करने के लिए ले जाता हो उसका इतना आदर करते हुए लोगों को शर्म नहीं आती?"

"नहीं, वह अपने को खतरे में डाल कर भी हमारी बहन बेटी के सतीत्व की रक्षा की जिम्मेवारी अपने ऊपर लेता है—इसीलिए उसका इतना आदर-सत्कार किया जाता है।"

× × ×

जिस दिन से हम गुणों का मूल्य रुपयों में आँकने लगे उस दिन से गुण हलका हो गया और रुपया भारी।

× × ×

किसान जगत् को देकर अपना पेट पालता है; व्यापारी अपना पेट पालने के लिए जगत् को देता है।

× × ×

पुरुष सिपाही है, स्त्री सेविका है। पुरुष डराकर छीनता है; स्त्री प्रेम से देती है।

× × ×

जिसे याद रखना पड़ता है, वह त्याग नहीं। व्यापारी याद रखता है; त्यागी भूल जाता है।

× × ×

पता नहीं, नंगा रहना बुरा क्यों समझा गया है? कहते हैं नंगी जातियों में तो विलासिता और कामुकता कम होती है। तब क्या विलास बढ़ाने के लिए ही मनुष्य ने कपड़े पहनना सीखा है?

मैं मजदूर हूँ—तुम मालिक हो। मैं दिन भर मेहनत करके थोड़ा सा लेता हूँ—तुम मेरा सब कुछ लेकर थोड़ा-सा मुझे दे देते हो।

× × ×

तुम ऊँचे हो और मैं नीच हूँ। क्योंकि तुम सेवा लेते हो और मैं सेवा करता हूँ।

× × ×

तुम कुलीन और मैं अछूत हूँ, क्योंकि तुम अपने घरों को गंदा करते हो, और मैं उन्हें साफ करता हूँ!

× × ×

तू भिन्न-भिन्न भाषाओं में विज्ञता प्राप्त करने की अपेक्षा आत्मा की भाषा क्यों नहीं सीखता? इस एक ही भाषा के सीख लेने से तू मनुष्य-जाति ही नहीं, प्राणी-जाति से बातचीत कर सकेगा।

× × ×

तू भौगोलिक, सांस्कारिक,आदि टुकड़ों में मनुष्य जाति को बाँट कर ईश्वर के घर में क्यों भेद डालने की चेष्टा करता है? इन टुकड़ों से तू अपने को चाहे धोखा दे ले; पर उस सर्वव्यापक की अनन्त आँखों में तू धूल नहीं झोंक सकता।

× × ×

क्या तुम मेरी करुण पुकार सुन कर आये हो? तो फिर मेरी दीनता का—निर्बलता का, असहायता का उपहास क्यों करते हो?

यदि किसी दुखी के लिए तुम्हारे पास सान्त्वना नहीं है तो अपने व्यङ्ग और उपहास से तो उसके कलेजे को मत छेदो। वह अमृत की आशा से आया है—ज़हर तो उसे साँप और छिपकली से भी मिल सकता था।

× × ×

तू अपने वैभव में मुझे क्यों भूलता है ? वैभव तो मेरी विभूति की एक झलक-मात्र है यदि उसी में तू चकाचौंध हो गया तो मेरा दर्शन कैसे करेगा ?

× × ×

तू पत्थर के देव के लिए जीते देवों का द्रोह क्यों करता है ? यदि ईश्वर सब का है और सब जगह है तो फिर इन धार्मिक कल्हों में क्यों अपने को बरबाद करता है और ईश्वर से दूर फेंकता है?

× × ×

यदि आप धार्मिक पुरुष हैं तो रोज़ दाल रोटी की फिक्र क्यों लगी रहती है ? क्या ईश्वर पर इतना भी भरोसा नहीं है ?

× × ×

यदि आप धार्मिक पुरुष हैं तो मुसलमान को देखकर तो आपका खून खौलने लगता है, पर एक अँगरेज़ को देखकर दुम दबाकर क्यों सलाम करने लगते हैं ?

× × ×

मनुष्य इन चार में से किसी भाव से काम करता है—(१) सेवा-भाव, (२) कर्त्तव्य-भाव, (३) उपकार-भाव और (४) स्वार्थ-

भाव। सेवा-भाव वाला केवल अपनी ज़िम्मेवारी का विचार नहीं करता, बल्कि कार्य की सफलता उसके सामने मुख्य है। कर्तव्य-भाव वाला अपनी ज़िम्मेदारी से आगे नहीं बढ़ना चाहता। उपकार-भाव मानों किसी पर एहसान करता हो—इसका दिल काम में नहीं होता। स्वार्थ-भाव के लिए यह कहावत अच्छी है—"गँजेड़ी यार किसके? दम लगाया और खिसके।"

× × ×

जो मनुष्य जितना ही अभिमानी होगा, उसको उतना ही झुकना पड़ेगा—कभी-कभी ज़लील भी होना पड़ेगा। उसकी प्रगति में यह आवश्यक संशोधन-क्रिया है।

× × ×

जो खुद झुक जाता है वह अपनी श्री को क़ायम रखता है; जिसे दूसरे ज़लील करते हैं वह श्री-हीन हो जाता है।

× × ×

परन्तु वह मनुष्य यदि वास्तव में श्रेयार्थी है तो वह तेजोवध भी, एक समय के बाद, उसकी प्रगति को ज़ोर का धक्का देता है।

× × ×

विकार, चोरों की तरह, ग़ाफ़िल मनुष्य के घर में ही सेंध लगाते हैं। जागरूकता उनके आक्रमण से बचाने के लिए सब से बड़ी ढाल है।

मन को ग़फ़लत के सुख से इतनी प्रीति है कि उसे देखकर सृष्टि-रचयिता की बुद्धि पर आश्चर्य और सन्देह दोनों होने लगते हैं!

× × ×

संसार में ईश्वर के सिवा ऐसा कोई स्थान नहीं है जहाँ मनुष्य अपना सारा हृदय खोल कर रख सके। और जगह कुछ-न-कुछ पर्दा ज़रूर रहता है। यह क्यों? इसलिए कि ईश्वर एक की बात दूसरे से नहीं कहता। और आवश्यकतानुसार शरणार्थी की रक्षा और सहायता करता है।

× × ×

मनुष्य के संबंधों में साधारणतः कुछ न कुछ स्वार्थ की, अपेक्षा की व् आया ही करती है, और मनुष्य के सामने दिल खोलने वाले को यह आशंका रहती है कि न जाने कब इसका विपरीत परिणाम निकल आवे।

× × ×

फिर जब कि ईश्वर सर्वसाक्षी, सर्वान्तर्यामी है, तो फिर उससे कोई बात छिपाकर रक्खोगे भी कहाँ? यह तो भलमन्सी और अक्लमंदी दोनों का तकाज़ा है कि ईश्वर के सामने मनुष्य सरल भाव से अपना हृदय खोल दिया करे।

× × ×

परन्तु जिस मनुष्य ने सत्य का रास्ता ग्रहण किया है, जो प्रत्येक मनुष्य में उसी ईश्वर का अंश देखता है, जिसे मनुष्य की मूलभूत भलाई पर विश्वास है, उसे मनुष्य से इतना चौंकने की क्या आवश्यकता है?

लोग कहते हैं कि संसार में दुःख अधिक है तो फिर लोग आत्महत्या क्यों नहीं कर डालते? अथवा बीमार होने पर इलाज क्यों करते कराते हैं।

× × ×

इसका कारण कहीं यह तो न हो कि मरने में उन्हें इससे भी अधिक दुःख का भय रहता है? या यह कि सांसारिक दुःख को सुख में बदलने के प्रयत्न के जो अवसर मिलते हैं उनकी आशा दुःखों को हलका कर देती है—उन्हें प्रसन्नता के साथ सहन कर लेने का बल दे देती है?

× × ×

ईश्वर की क्या खूबी है कि पत्नी, माता और बहन तीनों के एक साथ सामने आने पर भी मनुष्य के मन में तीन जुदी-जुदी भावनायें पैदा होती हैं।

× × ×

पहले मैं सरपट दौड़ता चला जाता था। अब फूँक-फूँक कर कदम रखता हूँ—यह मेरी उन्नति है या अवनति? प्रगति है या परागति?

× × ×

जहाँ सरपट दौड़ने की ज़रूरत है वहाँ हिचकना बुज़दिली है; जहाँ आहिस्ते चलने की ज़रूरत है वहाँ भी सरपट दौड़ना अविवेक है। दोनों का परिणाम होगा अवनति या परागति।

आलस्य में पशुता है, क्रिया में जीवन है, विवेक में मनुष्यता है।

× × ×

भक्ति के हृदय होता है, ज्ञान के आँखें होती हैं, कर्म के पैर होते हैं।

× × ×

भक्ति में व्याकुलता होती है, ज्ञान में शान्ति होती है, कर्म में स्वाभावता होती है।

× × ×

बुद्धि का चमत्कार देखना हो तो शास्त्रों को देखो। हृदय का जादू देखना हो तो कलाओं के पास जाओ।

× × ×

पुरुष को भगवान् ने अपनी बुद्धि से, और स्त्री को अपने हृदय से बनाया है। पुरुष शास्त्र और स्त्री कला है।

× × ×

स्थिति (Position) सब की जुदी है, परन्तु मनुष्य सब में एक है। तुम स्थिति को एक ओर रख कर मनुष्य को देखो और उससे बातें करो। तुम दोनों का मनुष्य मिल जायगा।

× × ×

स्थितियाँ दूर हटाती हैं, मनुष्य मिलाता है।

× × ×

विद्यार्थी बछड़ा है, और गुरु गाय है।

आजकल की पाठशालाओं के विद्यार्थी 'पढ़ते' कम हैं, 'पढ़ते' अधिक हैं।

× × ×

यदि सारी दुनिया मेरा घर है तो जेलखाने में भी मैं घर समझकर क्यों न रहूँ? जेल की चीजों को उसी एहतियात से क्यों न रक्खूँ जैसी कि घर की चीजों को रखता हूँ—जेल के सामान्य नियमों को उसी भाव से क्यों न पालूँ जिस भाव से अपने आश्रम के नियमों को पालता हूँ?

× × ×

हमारी संस्थाओं में भी तो ऐसे नियम होते हैं जिन्हें कोई-कोई सदस्य पसन्द नहीं करते हैं; परन्तु पालते तो वे उन्हें भी उसी भाव से हैं। फिर जेल के नियम-पालन में हमारी वृत्ति भिन्न क्यों होनी चाहिए?

× × ×

हमारी लड़ाई मौजूदा सरकार से है—सारी शासन पद्धति से है। फिर भी हम डाक, रेल, पुलिस, अदालत, शिक्षा आदि भिन्न-भिन्न विभागों के नियमों को तो पालते ही हैं—फिर जेल में आकर ही हमें बग़ावत क्यों सूझती है?

× × ×

"यहाँ आकर हम कदम-क़दम पर अपमानित होते हैं—मनुष्य नहीं पशु समझकर हमारे साथ व्यवहार किया जाता है।" किन्तु यह शारीरिक और मानसिक कष्ट ही तो वह क़ीमत है, जो हम से

आज़ादी के लिए चाही जाती है। यह क़ीमत चुकाने ही तो हम जेलों में आये हैं। क्या यह हमारे लिए अधिक गौरव का विषय नहीं है ?

× × ×

हमारी पहली लड़ाई में ईश्वर की मन्शा इंग्लैंड को जगाने की थी—इस लड़ाई में वह भारत को संकेत कर रहा है। पहली में वह चाहता था कि इंग्लैण्ड आत्मनिरीक्षण करे—अब की चाहता है कि भारत अपने घर को देखे।

× × ×

मैं जितना ही ढोंग करता हूँ उतना ही जगत् को नहीं अपने को ही धोखा देता हूँ। क्योंकि जगत् की दृष्टि मेरी ओर रहेगी और मेरी जगत् की ओर। जगत् उसे हजारों आँखों से देखेगा, मैं उसे सिर्फ दो आँखों से देखूँगा।

× × ×

यह दूसरों को गाली देने का युग है। इस बीसवीं सदी के कोष में बहादुर का अर्थ है गाली देनेवाला।

× × ×

जिस सेवा के अन्त में मन को सन्तोष और शान्ति नहीं मिलती उसके मूल में हमारा कोई स्वार्थ अवश्य होगा।

× × ×

जब तुमसे मित्रता थी तो तुम्हारी तारीफ करता था, अब झगड़ा हो गया तो बुराई करता फिरता हूँ। वह मित्रता नहीं, सौदा था।

जीवन मृत्यु का विकास और मृत्यु जीवन की परिणति है।

× × ×

प्रसूति-गृह और श्मशान दोनों जीवन के स्थान हैं; एक में यह खेलता है और दूसरे में सोता है।

× × ×

प्रकृति के यहाँ जीवन और मरण का एक ही मूल्य है। एक के लिए हर्ष और दूसरे के लिए विषाद की जगह वहाँ नहीं है। दोनों उसकी उद्देश-पूर्ति के साधन हैं, और दोनों अनिवार्य हैं।

× × ×

प्रकृति के इस रहस्य को जो समझ लेते हैं वे न मृत्यु का सोच करते हैं, न शोक, न उससे भय खाते हैं। जो जन्म से हर्षित होते हैं, उन्हें मृत्यु का शोक अवश्य करना पड़ता है।

× × ×

मृत्यु के रहस्य को समझ लेना ही अमरता है। संसार का प्रत्येक पदार्थ परिवर्तनशील है, पर नाशवान् नहीं। जो हमको नाश होता हुआ दीखता है, वह वास्तव में रूपान्तर है।

× × ×

हमारे जीवन का दृष्टि-बिन्दु जब तक व्यष्टिगत होता है तभी तक हमारे लिए जीवन और मरण हर्ष-शोकदायी होते रहते हैं। व्यष्टि से आगे बढ़कर दृष्टि जहाँ समष्टिगत हुई नहीं कि जीवन-मरण खेल दिखाई देने लगे वहीं।

गुलाब में चाहे कितनी ही बढ़िया सुगंध क्यों न हो, उसका मूल्य जन-साधारण के लिए खाद की दुर्गन्ध से कम ही है। गुलाब की सुगन्ध थोड़ों को केवल आनन्दित कर सकती है, खाद की सड़न मनुष्य-मात्र को जीवन देती है।

× × ×

अंगूर, तेरी मिठास और गुण मेरे हृदय को खींचे लेते हैं; परन्तु ऐ खाद, तेरी सड़न तो मेरे सामने जीवन का उच्च आदर्श रखती है।

× × ×

यदि पति के मरने से स्त्री—विधवा—अमंगला समझी जाती है तो फिर पत्नी के मर जाने पर पुरुष—विधुर—क्यों न अमंगल समझा जाय?

× × ×

रे मन, सुनने, समझने, और उपदेश करने में तो तू इतनी उत्सुकता बताता है कि हृदय आनन्द में मग्न हो जाता है। ऐसा जान पड़ता है कि कृतार्थ हो गये, तर गये। परन्तु जब पालन करने का अवसर आता है, जब सर पर आकर पड़ती है, तब न जाने क्यों तू अड़ियल टट्टू बन जाता है। उस समय ऐसा मालूम होता है, मानों यह मन किसी और का है

× × ×

जिस बात को नित्य याद रखने की चेष्टा करते हैं, जिसके लिए नित्य सावधान और जागरूक रहने का यत्न करते हैं, उसी को

ऐन मौके पर भूल जाते है, या अपने को गाफ़िल पाते हैं, या रोकते-रोकते भी अपने को नहीं रोक पाते; यह मन की कैसी विचित्रता और प्रबलता है ?

× × ×

मन के बल को ज्यों-ज्यों नापने लगते हैं, त्यों-त्यों उसकी शक्ति अपार और अपनी अल्प मालूम होती है; पर ज्यों-ज्यों हम संयम का यत्न करने लगते हैं, उसपर अंकुश लगाने में सफल होने लगते हैं, त्यों-त्यों लगाम हाथ में रखने वाले सवार की तरह अपने को सुरक्षित और बलवान् पाते जाते हैं।

× × ×

बचपन के संस्कार पत्थर की तरह अमिट साबित होते हैं। इसलिए बचपन की रक्षा एक सती जैसे सतीत्व की रक्षा के लिए सदा सचिन्त और जाग्रत रहती है, उसी तरह करनी चाहिए।

× × ×

कुसंगति के बराबर मनुष्य का शत्रु नहीं। बचपन में तो कुसंगति मीठे ज़हर का काम देती है।

× × ×

आस्तिकता, श्रद्धा, उत्साह और धीरज की परीक्षा विपत्ति और निराशा के ही समय होती है। जो व्यक्ति निःस्वार्थ है, जिसे पद और यश की लालसा नहीं है, कोई उच्च ध्येय जिसके सामने है, कार्य-सिद्धि के सिवा जिसे किसी बात की धुन नहीं

है, साध्य और साधन के सम्बन्ध में जिसकी बुद्धि निर्भ्रम और निश्चित है, जो यह मानता है कि सत्कर्म और सद्भाव का बुरा फल मिल ही नहीं सकता उसमें ये गुण अवश्य पाये जायँगे।

× × . ×

मन को शर्तों, नियमों और प्रतिज्ञाओं से इतना बाँध कर हम रखते हैं फिर भी वह चुपके से ऐसा खिसक जाता है कि बड़ी देर के बाद पता लगता है। फिर वह हँसते- सते हम को भी इस तरह फुसलाता जाता है, ऐसी-ऐसी मनोहर दलीलें देता है, ऐसे-ऐसे लुभावने दृश्य दिखाता है, कि हम फिसल ही पड़ते हैं और यदि शीघ्र न सँभले तो धड़ाम से गिर पड़ते हैं। जब गिर पड़ते हैं तब यह शैतान तो लापता हो जाता है; मौत है बेचारे विवेक की, वह वर्षों जलता-भुनता और सिर धुनता रहता है!

× × ×

जब पुरुषार्थियों की यह दशा है, योद्धाओं की यह गत है, तब उन लोगों पर मुझे दया आये बिना नहीं रहती जो मन के नचाये नाचते रहते हैं, और समझते हैं कि हम अपने-आपके मालिक हैं। वास्तव में वे अभी मन को वश में करने की पाठशाला में ही भरती नहीं हुए हैं!

× × ×

मन की शक्तियाँ अपार और अनन्त हैं, पर यदि हमने उसे अपने वश में करके उनका वैसा ही उपयोग न किया, जैसा कि एक इंजीनियर बिजली या भाप की शक्तियों का करता है, तो उसकी

बहुतेरी शक्ति बरसात की बाढ़ की तरह व्यर्थ चली जायगी, और लाभ के बदले हानि पहुँचायगी।

× × ×

सृष्टि के सब पदार्थ ईश्वर-निर्मित हैं, फिर भी हम उनमें अच्छे और बुरे का, हितकर और अहितकर का, उपयोगी और अनुपयोगी का भेद करते हैं। इसी तरह मन की प्रत्येक प्रेरणा, भाव, विचार, तरंग, सब यद्यपि ईश्वर-निर्मित हैं तथापि उनमें भी हमें पूर्वोक्त अच्छे-बुरे आदि का भेद करना ही होगा। अन्यथा बुद्धि का कुछ उपयोग ही न रह जायगा, और हम देव बनने के प्रयत्न में पशु बन जायँगे। ईश्वर के नज़दीक पहुँचने की चेष्टा करते हुए शैतान के नज़दीक जा पहुँचेंगे।

× × ×

जब मैं अपनी बुराइयाँ देखने लगूँगा तो दूसरे के प्रति अपने-आप उदार और सहिष्णु बनता जाऊँगा। जिस अंश तक मुझमें दूसरे के प्रति अनुदारता और असहिष्णुता है उस अँश तक, समझना चाहिए कि, मैंने अपनी कमियों, खामियों और बुराइयों को अच्छी तरह नहीं देखा है।

× × ×

मेरी कृति, मेरी रचना, मेरा आचरण, मेरे प्रतिबिम्ब हैं। ये मुझ से अच्छे नहीं हो सकते।

किसी में प्रेरक बल होता है, किसी में सञ्चालन-बल होता है, किसी में पथदर्शन-गुण होता है, किसी में दूसरों को अपने साथ खींच ले जाने का बल—प्रचोदन बल—होता है; किसी में संगठन-बल, किसी में प्रबन्ध-पटुता और किसी में संयोजना-शक्ति होती है। ये सब ईश्वरीय देन हैं—या यों कहें कि हमारे पूर्व संस्कारों के फल हैं। मेरी समझ से संयोजना शक्ति इन सब में प्रधान है क्योंकि किससे कितना और कैसा काम लेना इस बुद्धि के बिना ये सब शक्तियाँ स्वतन्त्र-रूप से विशेष उपकारिणी नहीं हो सकतीं।

× × ×

प्रेरक-बल में शुभ भावना, सञ्चालन-बल में आत्मविश्वास, पथ-दर्शन में अनुभव, प्रचोदन में आग्रह, संगठन में व्यापक प्रेम, प्रबन्ध-पटुता में व्यवहार-बुद्धि और संयोजना में विवेक, कौशल और स्वभाव-निरीक्षण की प्रधानता होती है।

× × ×

यदि तुम आत्मिक उन्नति चाहते हो तो मन पर विजय किये बिना छुटकारा नहीं है। यदि मन पर विजय करना हो तो दो बातें करनी होंगी—मन के प्रत्येक कार्य पर कड़ी निगरानी और गलती हो जाने की अवस्था में मन को क्षमा न करना। यदि जीवन में सुख, शान्ति और स्वाधीनता चाहते हो तो आत्मा की ओर गये बिना वह असंभव है।

अनुताप और उपवास ये दो श्रेष्ठ दण्ड-साधन हैं। अनुताप स्वाभाविक और उपवास कृत्रिम दण्ड है। किन्तु उपवास में कई उत्कृष्ट गुण हैं।

× × ×

शारीरिक मलों को मिटाने के लिए, विचार-शक्ति को जाग्रत करने के लिए, मन को प्रफुल्ल बनाने और विकारों को शान्त रखने के लिए उपवास महौषधि है। किन्तु अनुभवी की सलाह अवश्य ले लेनी चाहिए।

× × ×

फूलों को यों चखो तो प्राय: सब कड़ुवे मालूम होते हैं, परन्तु मधुमक्खी उन्हीं में से मधुरस—शहद—एकत्र कर लेती है। मधु मक्खी के रहते हुए भी ऐ मनुष्य, तू दूसरों के सु-रसों का संग्रह क्यों नहीं करता?

× × ×

यदि तू किसी से मित्रता करना चाहता है तो उसके हित के लिए कष्ट उठा।

× × ×

तू अधिकार पाने के लिए मुझ से लड़ता क्यों है? या तो मेरी सद्भावना पर तुझे भरोसा नहीं है, या तेरी योग्यता की छाप मुझ पर नहीं पड़ी है। यदि पहली बात है तो क्या मैं और तरह से तुझे नुकसान नहीं पहुँचा सकता? यदि दूसरी बात है तो तू मेरे निस्बत अपने से क्यों नहीं लड़ता!

विजय के मानी दूसरे को मिटाना या ज़लील करना नहीं, बल्कि सुनियन्त्रित करना है। विजय के मानी अपने को उद्धत, मदोन्मत और स्वेच्छाचारी बनाना नहीं बल्कि अधिक नम्र, अधिक न्यायी और अधिक ज़िम्मेदार बनाना है।

× × ×

यदि तू तेज़ मिजाज है तो तेरा शरीर हृष्ट-पुष्ट नहीं हो सकता, तेरा मन शान्त और सुव्यवस्थित नहीं रह सकता।

× × ×

यदि तू तुनक मिज़ाज है तो किसी की सहानुभूति यदि तेरे साथ होगी भी तो वह नष्ट हो जायगी।

× × ×

यदि तू हठधर्मी है तो लोग तेरी अच्छी बातों की कदर करना छोड़ देंगे।

× × ×

यदि तू घमण्डी है, अहम्मन्य है तो लोग तुझे गिराने और ज़लील करने की चेष्टा करेंगे।

× × ×

यदि तू विषयासक्त है तो भले आदमी तुझसे मन ही मन घृणा करने लगेंगे।

× × ×

यदि तू मूर्ख है तो भले आदमी तेरे साथ हमदर्दी रक्खेंगे, तेरे दुःख-सुख में शरीक होंगे—यदि तू चुस्त-चालाक और मक्कार है तो

तेरी विपत्ति के समय लोग घर में बैठकर आपस में बातें करेंगे—अच्छा हुआ, ईश्वर ने न्याय ही किया है!

× × ×

भगवान् जाने, जन्म-मरण के फेरे से हमारे प्राचीन लोग इतने क्यों ऊब गये थे? गर्भवास के दुःखों का इस समय हमें कोई ज्ञान नहीं है—और मृत्यु के दुःख का अनुभव नहीं—पिछले जन्मों की कोई स्मृति नहीं। हमें वास्तव में दुःखों से नहीं, उन कर्मों से घबराना चाहिए जिनका फल दुःख होता है। कुकर्म करना दुष्टता है और उनके फलों से घबराना कायरता है।

× × ×

यदि भगवान् सदा सत्कर्म करने की ही प्रेरणा करता रहे, तो बारबार संसार में आने में क्या बुराई है? यहाँ आकर तो स्वार्थ-परमार्थ दोनों सधते हैं!

× × ×

हम भारतवासी बड़े दूरदर्शी हैं—या तो सोचेंगे पूर्व जन्म के कर्मों को, या सोचेंगे अगले जन्म के जीवन को, इस जन्म को तो वे इस तरह भूल जाते हैं जैसे नवदम्पती अपने माँ बाप को।

× × ×

माता में वात्सल्य, पिता में उपयोगिता, पत्नी में अनुराग, मित्र में स्नेह, गुरु में हितकारिता, भाई में ममत्व और बहन में प्रीति होती है।

विवेकानन्द में वेदान्त का ज्ञान, रामतीर्थ में वेदान्त की उछाल, अरविन्द में साधना और गाँधी में वेदान्त का उत्साह या जीवन है।

× × ×

वर्तमान काल के नेता-पिताओं में स्व० पं० मोतीलालजी के ही भाग्य की सराहना की जा सकती है।

× × ×

अब देश के सामने *स्व-भाग्य-निर्णय और राष्ट्र-रचना* के प्रश्न इतने वेग से आ रहे हैं कि 'साहित्य-सेवा' मध्य-युग की वस्तु मालूम होती है।

× × ×

दमन और संयम भिन्न-भिन्न हैं। दमन में स्वतन्त्रता छीनी जाती है; संयम में बुरी बातों से अपने को बचाया जाता है। दमन प्रायः दूसरे करते हैं; संयम खुद किया जाता है। दमन में दूसरे का बल दबाता है; संयम में अपना ज्ञान बचाता है। दमन बिगाड़ता है, संयम सुधारता है

× × ×

जिसके घर में साँप घुस गया है और जो इस बात को जानता नहीं है, उस पर हमें क्रोध आवेगा, या दया? तो फिर अज्ञानी, रोगी, पतित पर हमें क्रोध क्यों आना चाहिए? और फिर दया किन लोगों के लिए है?

जब कोई यह कहता है कि भाई, मैं दूसरों पर नहीं, अपने पर ही गुस्सा होता हूँ तो क्या इसका यह अर्थ नहीं होता कि दूसरों के अपराध का दण्ड मैं अपने को ही देता हूँ ?

× × ×

पहले इन्दौर से 'वीणा' निकली, बाद को इन्दौर-राज्य से 'वाणी' निकली। ठीक ही है, सरस्वती ने पहले तो शहर वालों के लिए 'वीणा' भेज दी, अब मुफस्सिल में वे खुद आई हैं। क्या उनकी यह योजना उचित नहीं है ?

× × ×

जहाँ लोग गुण्डों से डरकर, उन्हें पैसा देकर अपनाये रखना चाहते हों वहाँ सज्जनों के लिए घोर कलिकाल ही समझना चाहिए। कच्चे सज्जन भी यदि वहाँ गुण्डा बनने के लिए ललचा जायं तो क्या ताज्जुब है ?

× × ×

पहले माँ मीठी थी, अब कडुवी क्यों होगई ? क्या इसीलिए कि वह अपनी पतोहू को डाटती रहती है ?

× × ×

यदि तू उच्चाकांक्षी है तो तुझमें जोखिम उठाने का, खतरों में कूद पड़ने का साहस अवश्य होना चाहिए।

× × ×

कौटुम्बिक और सामाजिक बहिष्कार राजदण्ड से भी भयंकर है। राजदण्डित के साथ सारे देश की सहानुभूति होती है, समाज-बहिष्कृत से वे भी दूर रहने लगते हैं जो घनिष्ट मित्र कहलाते हैं।

बुद्धि कोई सन्तोषजनक उत्तर दे या न दे, जो ईश्वर पर सच्ची श्रद्धा रखता है, वह क़दम-क़दम पर चमत्कारों का अनुभव कर सकता है। दूसरों को जहाँ भयंकर खाई और अलंघ्य पर्वत दिखाई देता है, वहाँ उसके लिए खुला रास्ता मिलता है।

× × ×

ईश्वर पर श्रद्धा रखनेवाला काहिल, सुस्त, निकम्मा, और निष्क्रिय नहीं रह सकता। ईश्वर क्या है? अनन्त, अखण्ड, अक्षय अनवरत चैतन्य शक्ति है! उसका उपासक मन्द और जड़ कैसे हो सकता है?

× × ×

श्रद्धा अन्धता का नहीं, बल और धीरज का चिन्ह है। जहाँ अन्धता है, वहाँ स्व-प्रेरित और अनवरत क्रियाशीलता हो ही नहीं सकती।

× × ×

सिद्धान्त पर, तत्त्व पर, या आदर्श पर आँख मूँद कर श्रद्धा रक्खी जा सकती है, किन्तु व्यक्ति पर नहीं। व्यक्ति पर रखने से पहले इतनी बातों की खूब जाँच कर लो—(१) वह पूर्ण निःस्वार्थ है या नहीं? (२) उसका चरित्र शुद्ध और आदर्श उच्च है या नहीं? (३) जैसा कहता है वैसा करने का हार्दिक प्रयत्न करता है या नहीं? (४) उसका कोई निश्चित जीवन-सिद्धान्त है या नहीं?

तू आईने में अपना मुँह क्या देखता है ? दिल में अपना मुँह देख। आईना तो तेरे चमड़े का रंग तुझे दिखा देगा। दिल तुझे तेरी असली हालत दिखावेगा।

× × ×

यदि तू साधु है, योगी है, तो अंगूर और शहद को देखकर क्यों तेरी आँखें चमकने लगती हैं और चेहरे पर नूर छिटकने लगता है; परन्तु नीम, गिलोय, या कुनेन पीते वक्त क्यों मुँह बिगड़ने लगता है ?

× × ×

यदि सुख और सफलता में तू अधिक उत्साहित होता है तो दुःख और विफलता में अवश्य निराश होगा।

× × ×

देशभक्ति निरंकुशता का परवाना नहीं, आत्मसंयम और आत्मत्याग की कसौटी है।

× × ×

विद्वत्ता यदि हमें ग़ैर जिम्मेवार बनाती है त मूर्ख रहकर हमने अपने धन, समय और श्रम की कितनी बचत की होती।

× × ×

धन और अधिकार यदि हमें उन्मत्त बना देते हैं तो फिर मद्यपान-निषेध का आन्दोलन क्यों व्यर्थ ही किया जाता है ?

× × ×

मन का भाव बदलते ही आँखों का रंग बदल जाता है। किसी के भाव को देखना हो तो उसकी आँखों को अच्छी तरह देखो।

या तो अत्यन्त तेजस्वी या अपराधी मनुष्य आँखों से आँख नहीं मिलाता। तेजस्वी दूसरे को अपने प्रभाव से बचाना चाहता है और अपराधी अपनी कमज़ोरी को छिपाना चाहता है।

× × ×

'अ' की मूँछ के बाल खड़े रहते थे। एक मित्र ने कहा कि जिसकी मूँछों के बाल खड़े होते हैं, उसके बुद्धि कम होती है। अब 'अ' को हम सफाचट देखते हैं। तो अब बुद्धि किसकी कम हुई।

× × ×

एक संगीतज्ञ मित्र अपनी नवागता पत्नी की तारीफ करते हुए नहीं अघाते। मालूम होता है उन्होंने अपने संगीत की तान उसी को समझ लिया है।

× × ×

मैं जनता का हितैषी हूँ; क्योंकि मैं रूस की सरकार से पैसे लेकर उसके लिए अखबार निकालता हूँ, व्याख्यान देता हू, पर्चे बांटता हूँ, और इसके लिए संघ बनाता हूँ; तुम पूँजीपतियों के पुछल्ले हो; क्योंकि तुम धनिकों से भीख मांग-मांगकर खादी का व्यापार करते हो!!

× × ×

मुझे ऊँचे स्टैंडर्ड से रहना चाहिए, क्योंकि मैं 'कम्युनिस्ट' हूँ मुझे जनता को ऊँचा उठाना है!!

'इतना बड़ा स्वराज्य का आन्दोलन चल रहा है, और तुम अभी तक जेल नहीं गये ?'

'हाँ, क्योंकि कांग्रेस में पूँजीपतियों की प्रधानता है, वह जनता की सच्ची प्रतिनिधि नहीं है !'

× × ×

'तो आप कांग्रेस से स्वतन्त्र रह कर क्यों नहीं जेल जाते ?'

'क्योंकि अहिंसात्मक आन्दोलन में मेरा विश्वास नहीं है !'

× × ×

स्वर्गीय पण्डित मोतीलालजी नेहरू ने एक बार कहा था कि एक प्रभावशाली मुसलमान सज्जन ने उनसे कहा—'पण्डितजी क्या करें, गाँधीजी तो मर्दों के हाथों में चूड़ियाँ पहना देना चाहते हैं। कोई तलवार का प्रोग्राम आप बनावें तो मैं दल-बल-सहित कूद पड़ने को तैयार हूँ।'

पण्डितजी ने जवाब दिया—'अजी वाह ! मैं ऐसे ही लोगों की तो तलाश में हूँ। आप कल फिर आइए और हम दोनों मिल-कर प्रोग्राम बना लेंगे।'

पण्डितजी बेचारे स्वर्गधाम को सिधार गये, पर उन सज्जन के दर्शन उन्हें फिर न हुए।

× × ×

जो उधर तो आतङ्कवादियों को उकसाते रहते हैं और इधर कांग्रेस में शान्तिवादी बनते हैं वे कायर और बेईमान दोनों हैं।

मनुष्यता की पहली शर्त, ईमानदारी, को तोड़कर वे देश के युवकों को ग़लत रास्ता दिखाने के भी अपराधी हैं।

× × ×

जो देश की राष्ट्रीय सरकार (कांग्रेस) को धोखा दे सकते हैं—वे किसे छोड़ेंगे ?

× × ×

मानवी गुणों को धूल में मिलाकर भारत को स्वतन्त्र और उच्च राष्ट्र बनाने की कल्पना करना फ़जूल है।

× × ×

जो शख़्स अपनी ही बात दूसरों से मनवाना चाहता है वह—(१) या तो यह मानता होगा कि मैं सर्वज्ञ हूँ, या (२) यह कि मैं सम्पूर्ण हूँ (३) अथवा यह कि दूसरे की स्वतन्त्रता को ठेस पहुँचा कर भी उसके सिर पर चढ़ने का दुराग्रह उसमें है।

× × ×

यदि किसी दुखी, या सन्तप्त या पीड़ित को देखकर तुम्हारे मन में यह भाव पैदा हो कि अच्छा हुआ, इस को भगवान् ने ठीक ही सज़ा दी है, तो समझो कि तुममें मनुष्यता की कमी है।

× × ×

यदि किसी स्त्री को देख कर उस के रूप की ओर तुम्हारा मन ललचाया तो समझो कि तुम्हारी आँखों में ज़हर भरा हुआ है, जो उससे पहले तुम्हारा सत्यानाश कर देगा।

यदि किसी के पतन पर तुम्हें खुशी हो तो समझ लो कि अनजान में तुम्हारा पतन हो रहा है।

× × ×

बहादुर वह है जो शत्रु के भी गुणों की प्रशंसा करे, जो शत्रु के भी पराजय पर उसके दुःख से दुःखी हो; जो उसकी बुराई को तो दूर करे पर जो उसके तेज को मलिन करने का यत्न न करे।

× × ×

जब मैं परमात्मा की ओर देखता हूं तो वह बहुत नज़दीक मालूम होता है, पर जब जगत् की ओर देखता हूँ तो उसके अस्तित्व में भी शंका होने लगती है—कम से कम उसकी न्याय-शीलता में तो अवश्य।

× × ×

मनुष्य ने अभी तक जितना कुछ जाना है उसी पर से तो उसने परमात्मा की गद्दी पर अपना अधिकार साबित कर दिया है। जो उसने नहीं जाना है, वह उस जाने हुए से बहुत अधिक है; उसके जान लेने पर तो शायद वह यह दावा करने लगेगा कि केवल पर-मात्मा ही नहीं मैं तो उसका बनानेवाला हूँ।

× × ×

मनुष्य ज्यों-ज्यों ऊपर उठता है, ज्यों-ज्यों सूक्ष्म-बुद्धि होता है, त्यों-त्यों उसका मार्ग बहुत सँकड़ा होता जाता है। परन्तु इस तंग रास्ते में लहूलुहान पैरों से पैदल चलते हुए उसे जो सुख और

समाधान मिलता है, वह राज-मार्गों में गेंद की तरह उछलती हुई। मोटर पर दौड़ते हुए नहीं मिलता था।

× × ×

तुम मुझे क्यों मान देते हो, जब कि दूसरे उसे चाहते हैं! तुम उनको मुझसे वंचित रख कर मेरी कठिनाइयों की वृद्धि क्यों करते हो?

× × ×

अंगरेज़ों के आने के पहले हम लोग गँवार और पुरुषार्थ-हीन थे; क्योंकि एक कमाता था और दस का पेट भरता था; अब हम सभ्य और स्वावलम्बी हो गये हैं क्योंकि १० कमाते हैं फिर भी दसों का पेट नहीं भरता!!

× × ×

जब चन्दा लेने जाते हैं तो सेठजी व्यापार के टोटे का हाल सुनाने लगते हैं; जब बेटे का ब्याह होता है तो हज़ारों आतिश-बाज़ी, मँगलामुखियों के दर्शन, और भोजों में उड़ा देते हैं! मालूम होता है भगवान् से उन्होंने कोई ठहराव कर लिया है कि जब चन्दा लेने वाले आवें तो व्यापार में नुकसान कर दिया करे और ब्याह-शादी का अवसर आवे तो वारे-न्यारे कर दिया करे!

× × ×

एक दामाद अपने ससुर के यहाँ चन्दे के लिए लिवा ले गये। उनकी आशा और कल्पना के बाहर ससुरजी ने हमें सूखा टरका दिया। एक-दो बातें ऐसी भी कह दीं तो दामाद जी को लग गई?

बाहर निकलने पर प्रमाद-मित्र कहने लगे—'माफ़ कीजिएगा, मैं नहीं जानता था कि आपको इस तरह निराश और अपमानित भी होना पड़ेगा।' मैंने उन्हें सान्त्वना देते हुए कहा—'भाई, यह तो हम जैसों की मजबूरी है !!'

× × ×

भगवान् भी ज़बरदस्त शिक्षक हैं। जब मैं कठिनाइयों का स्वागत करने लगता हूँ; कष्ट उठाने का कार्यक्रम बनाता हूँ तो वह सुविधायें कर देता है। जब मैं उन सुविधाओं से लाभ उठाने लगता हूँ—ग़ाफ़िल होने लगता हूँ तो वह उन्हें चुपके से खींच लेता है।

× × ×

तू स्थितप्रज्ञ है; क्योंकि जब मैं दुखी था तो तू हँसता था; मैं संसारी जीव हूँ, क्योंकि जब तू दुखी है और मैं तेरे लिए रो रहा हूँ !!

× × ×

जब मैं अपने हृदय पर हाथ रखता हूँ तो उसकी धड़कन में तेज़ी मालूम होती है, दिमाग़ को टटोलता हूँ तो वह दिल की शिकायत करता मालूम होता है।

× × ×

दिमाग़ दिल को खींच रखना चाहता है और दिल दिमाग़ को ले भागना चाहता है।

मुझे अपने पर विश्वास है; क्योंकि मुझे परमात्मा में विश्वास है। और मैं दूसरे पर विश्वास करता हूँ; क्योंकि मुझे अपने पर विश्वास है।

× × ×

जो आज पर दृष्टि रखता है वह व्यावहारिक; जो कल पर दृष्टि रखता है वह आदर्शवादी कहलाता है। परन्तु ये दोनों अधूरे हैं; पूर्ण वह है जो कल से आज का मेल मिलाता है।

× × ×

सामाजिक कार्यों की गति धीमी और लाभ व्यापक रहेगा। समाज व्यक्ति की तेज़ी से नहीं चल सकता। समाज में सामान्यतः मध्यम मार्ग ही अधिक सफल हो सकता है।

× × ×

तुमने क्रोध और आवेश में जितना कुछ लिखा है वह चाहे कितना ही सुन्दर हो, निठुर होकर काट डालो। वह सुन्दरता साप के फन की सुन्दरता की तरह है।

× × ×

आवेश में जो-कुछ भी करोगे उसका पश्चात्ताप पीछे ज़रूर होगा।

× × ×

आँसू हमारे हृदय के मोती हैं। करुणा के आँसू दुखी की सान्त्वना है, पश्चात्ताप के आँसू हृदय की शुद्धि हैं; शोक के आँसू हृदय की पुकार है, हर्ष के आँसू धन्यवाद और कृतज्ञता की दौड़ है।

क्या तू मुझ से बैर निकालना चाहता है ? तो फिर मुझे जान से मार डालने की अपेक्षा मेरी बदनामी और बुराई जगत् में क्यों नहीं करता रहता ?

× × ×

छुपकर पाप करना कायरता और खुलकर पाप करना बेहयाई है। पापी के लिए परमात्मा की शरण के सिवा कहीं जगह नहीं है।

× × ×

पाप करके भी जो मूँछे मरोड़ता फिरता है, समझो कि अभी उसका अधःपात बाकी है।

× × ×

जो पाप करके छिपाता है, वह और गिरता है, जो लज्जित होता है वह पाप का रास्ता रोकता है, जो पश्चात्ताप करता है वह पुण्य को निमंत्रण देता है।

× × ×

पाप की कल्पना आरम्भ में अफीम के फूल की तरह सुन्दर और मनोहारिणी होती हैं, किन्तु अन्त में नागिन के आलिंगन की तरह विनाशमयी है।

× × ×

पाप मृत्यु की, विनाश की बंसी है, जिसके काँटे का ज्ञान मछली को लीलते समय नहीं बल्कि मरते समय होता है।

× × ×

बुद्धिमान् वह है जो पाप की आजमाकर परीक्षा न करे। मित्र वह है जो पाप में पड़ने से रोके। शत्रु वह है जो पापकी ओर ले जाय।

पत्नी वह है जो अपने को पति में मिला दे। पति वह है जो पत्नी को अपनी अर्द्धांगिनी नहीं, पूर्णांगिनी समझे।

× × ×

यदि तुम से मेरा कुछ भी रिश्ता है, तो तुझे मेरे शरीर, मेरी कीर्ति, मेरे धन, मेरे वैभव की नहीं, मेरी आत्मा की चिन्ता करनी चाहिए।

× × ×

महात्माजी से एक बहुत बड़े धनी पुरुष ने पूछा कि आप मुझे लेना पसन्द करेंगे या मेरे धन को। उन्होंने फौरन् उत्तर दिया 'आपको।'

× × ×

'तो मुझे आप क्या काम देंगे? अपना सेक्रेटरी बना लेंगे?' उन्होंने उसी तरह बेखटके कहा—'नहीं, चरखा दूँगा।'

× × ×

एक पैसे वाले मित्र ने लिखा—'मैं चाहता हूँ कि तुम्हें पैसे का कष्ट हो।' अरे भाई, ब्राह्मण को अपने लिए तो पैसे की जरूरत होती नहीं, और देश कार्य के लिए तो वह बड़े से बड़े कष्ट उठाने को तैयार रहता है, फिर पैसे का कष्ट कौन बड़ा है? यदि वह सच्चा देश-सेवक है तो उसके कष्टों की फिक्र करना उसका काम नहीं है।

× × ×

जब सत्कर्मी को असह्य कष्ट हो तो समझना चाहिए कि ईश्वर शीघ्र ही उस पर कृपा करनेवाला है।

सस्ता-साहित्य-मण्डल, अजमेर के

प्रकाशन